अर्पित

श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा,
जिला - रायपुर (छत्तीसगढ़)

सन् 2018 - 19

Scanned with CamScanner

डॉ. आलोक शुक्ला

प्राचार्य

Scanned with CamScanner

श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा, जिला-रायपुर (छ.ग.)

अर्पित

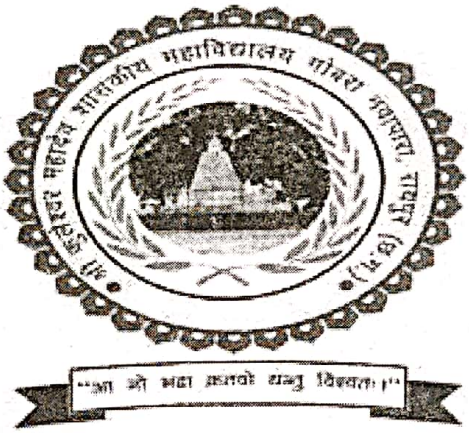

संरक्षक

डॉ. आलोक शुक्ला

संपादक मंडल

डॉ. मधुरानी शुक्ला

श्री एस.आर. वड्डे

श्री ए.के. गुप्ता

श्री जितेंद्र सिन्हा

प्रथम अंक- वर्ष 2019

विशेष : 1. इस पत्रिका शामिल लेख, कविताओं में संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

2. इस पत्रिका के बारे में आपकी प्रतिक्रियाएँ govt.gnr.college मेल में आमत्रित हैं।

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

.....

महाविद्यालयीन पत्रिका 'अर्पित'

सादर भेंट

डॉ. आलोक शुक्ला

Scanned with CamScanner

श्रीकुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, नवापारा

कुलगीत

देवों के हैं देव कुलेश्वर, जिनका है यह पावन धाम।
उनके श्रीचरणों में अर्पित कोटि-कोटि शत कोटि प्रणाम ॥

लोमस ऋषि की तपस्थली यह, जहाँ यज्ञ का नित्य विधान
धर्म और अध्यात्म जहाँ मिलकर करते मानव-कल्याण
महानदी-पैरी का संगम पुण्य तीर्थ कण-कण अभिराम ॥

राजीवलोचन यहाँ विराजें, उनकी महिमा गाए कौन
वेद-उपनिषद्-स्मृति-पुराण भी हो जाते हैं निश्चल-मौन
हरि-हर जहाँ साथ रहते हैं, कमलक्षेत्र है उसका नाम ॥

कला और विद्या की नगरी में शिक्षा का यह अभियान
संस्कृति की रक्षा में तत्पर हों युवजन पाकर सद्ज्ञान
ज्ञान-यज्ञ की परंपरा का करें निर्वहण आठों याम ॥

यह विद्यालय जहाँ उच्च शिक्षा पाना ही सबका ध्येय
कुल के ईश्वर महादेव की कृपा-मात्र को सारा श्रेय
शिव-संकल्पों से पा जाएँ सभी मनोवांछित परिणाम ॥

मौलिक / अप्रकाशित / अप्रसारित.

6.5.2019.

(डॉ० चित्त रंजन कर)

Scanned with CamScanner

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़
भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स: +91-771-2331108

क्र./231/पीआरओ/रास/19
रायपुर, दिनांक 08 अगस्त 2019

संदेश

प्रसन्नता की बात है कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा–नवापारा द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका **'अर्पित'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएं, विद्यार्थियों के रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करती हैं। इसके जरिए विद्यार्थियों की साहित्यिक अभिरूचि को प्रस्फुटित होने का अवसर प्राप्त होता है। आशा है कि महाविद्यालय के गतिविधियों की जानकारी के साथ–साथ नवोदित प्रतिभाओं को भी आगे आने का अवसर मिलेगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनुसुईया उइके)

Scanned with CamScanner

डॉ. चरणदास महंत
Dr. CHARANDAS MAHANT

अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा
SPEAKER, CHHATTISGARH
LEGISLATIVE ASSEMBLY

अर्द्ध शास. पत्र क्र. 174/अ.वि.स./19
रायपुर, दिनांक 23/07/2019

यह प्रसन्नता का विषय है कि **श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा, ग्राम तर्री, जिला रायपुर** की वार्षिक पत्रिका **"अर्पित"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी शैक्षणिक संस्था की वार्षिक पत्रिका छात्र–छात्राओं में साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक अभिरूचि को प्रदर्शित करती है। इस आधार पर मेरा यह विश्वास है, आपकी संस्था से प्रकाशित होने वाली यह महाविद्यालीन वार्षिक पत्रिका अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विचारों और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति होगी।

कामना करता हूँ प्रकाशित होने वाली वार्षिक पत्रिका **"अर्पित"** अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. चरणदास महंत)

प्रति,

डॉ. आलोक शुक्ला,
प्राचार्य,
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय
महाविद्यालय गोबरा नवापारा,
ग्राम तर्री, जिला रायपुर,
9301593807

स्पीकर हाऊस, ए–1, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.) 492001 (भारत) दूरभाष : +91-771 2331028, 2444589 ई–मेल – speakerhouse.cg@gmail.com
Speaker house, A-1, Shankar Nagar, Raipur (C.G.) 492001 (INDIA) Tel. : +91-771 2331028, 2444589 Email - speakerhouse.cg@gmail.com

Scanned with CamScanner

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई–मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in
Do.No. 473/hcm/ Date : 07.08.19

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा–नवापारा रायपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'अर्पित' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने व अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

Scanned with CamScanner

रविन्द्र चौबे
मंत्री
संसदीय कार्य, विधि एवं विधायी कार्य,
कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा
जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली
पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
छत्तीसगढ़ शासन

कार्यालय : एम-3 / 1-5, महानदी भवन,
अटल नगर, रायपुर,
छत्तीसगढ़ - 492002
फोन : 0771-2510223,2221223
निवास : सी-4, शंकर नगर, रायपुर
छत्तीसगढ़ - 492007
फोन : 2331020, 2331021
फैक्स : 0771-2445836
मोबाईल : +91 94252-34400

दिनांक : 02/08/19

क्रमांक : 1764

।। शुभकामना संदेश ।।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई हैं कि **"श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा नवापारा,"** जिला रायपुर छत्तीसगढ़ द्वारा स्थापना के एक दशक पश्चात् प्रथम बार महाविद्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। महाविद्यालयीन पत्रिका संस्था का दर्पण हुआ करती है, जिसमें छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा सृजन शक्ति की जानकारी मिलती है। "अर्पित" पत्रिका छात्र–छात्राओं एवं पाठकों के लिए प्रेरणास्पद हो।

मैं "अर्पित" पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(रविन्द्र चौबे)

Scanned with CamScanner

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक- M1-12
महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर 492002 (छत्तीसगढ़)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि. : D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़ कार्यालय: 7000477747

क्रमांक B/1369 दिनांक 07:08:2019

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा - नवापारा द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "अर्पित" का प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। छात्र–छात्राओं के रचनात्मक ऊर्जा के विकास, सृजन–क्षमता का प्रदर्शन, व्यक्तित्व एवं अभिरूचि को विकसित करने के लिए महाविद्यालयीन पत्रिका एक सशक्त माध्यम होती है।

आशा है महाविद्यालय पत्रिका "अर्पित" महाविद्यालय की गतिविधियां एवं छात्राओं के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सृजनात्मकता को विकसित एवं प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

महाविद्यालयीन पत्रिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(उमेश पटेल)

Scanned with CamScanner

धनेन्द्र साहू
विधायक
53, अभनपुर, जिला- रायपुर (छ.ग.)
सदस्य - अ.भा.कांग्रेस कमेटी, नई दिल्ली
पूर्व मंत्री - म.प्र. एवं छ.ग. शासन
पूर्व अध्यक्ष - छ.ग. प्रदेश कांग्रेस कमेटी

निवास : संतोषी नगर, गुडलक प्लास्टिक फैक्ट्री के पास, बोरिया रोड, रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : 0771-4004440
फैक्स : 0771-4004440
मो.न. : 94252-03288
दूरभाष : तोरला : 0771-2778138

स्थाई निवास: ग्राम-तोरला, पोस्ट- भुरका, तहसील- अभनपुर, जिला- रायपुर (छ.ग.) E-mail: dhanendrasahu999@gmail.com
कार्यालय - "संगवारी" पुराना पुलिस चौकी रोड, गोबरा नयापारा (2) "सद्भावना कुटी" नायकबांधा रोड, अभनपुर

क्रमांक 475 दिनांक 15/06/19

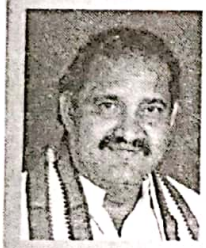

शुभकामना संदेश

—00—

यह जानकर अत्यन्त ही प्रसन्नता हुई कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा—नवापारा,ग्राम —तर्री, जिला—रायपुर , स्थापना के एक दशक के बाद महाविद्यालय द्वारा पहली बार महाविद्यालयीन पत्रिका "अर्पित" का प्रकाशन किया जा रहा है ।

" अर्पित " के माध्यम से महाविद्याालयीन गतिविधियों एवं प्रतिभाओं की सृजन क्षमता को प्रस्फुटित होने का अवसर प्राप्त होगा । महाविद्यालय उच्चशिक्षा के गुणवत्ता मूलक स्वरूप के प्रचार—प्रसार में सदैव सजग एवं प्रयासरत रहेगा , ऐसा विश्वास है ।

पत्रिका छात्रों के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्पद हो , ऐसी शुभकामनाओं के साथ ,

सादर,
आपका,
(धनेन्द्र साहू) 13/6/19

प्रति,

डॉ. आलोक शुक्ला
प्राचार्य
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय
गोबरा—नवापारा,

Scanned with CamScanner

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति

Dr. Keshari Lal Verma
Vice Chancellor

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) भारत
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (Chhattisgarh) - 492010-INDIA
Office : + 91 771-2262857
Fax : + 91 771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.org.in
Website : www.prsu.ac.in
Mobile : 0852734400

रायपुर, दिनांक 06 अगस्त, 2019

शुभकामना

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोवरा नवापारा, ग्राम तर्री, जिला–रायपुर द्वारा स्थापना के बाद पहली बार महाविद्यालयीन पत्रिका **'अर्पित'** का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी शैक्षणिक संस्था का उद्देश्य अपने विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के साथ–साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों, यथा–साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेलकूद, व्यक्तित्व विकास, आदि में भी सक्षम बनाना है। महाविद्यालयीन पत्रिका विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं अभिरुचि को विकसित एवं प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम होती है। इसके माध्यम से युवाओं के सृजनात्मक प्रतिभा एवं सकारात्मक दृष्टिकोण को पथ प्रदर्शित किया जाएगा, ऐसा विश्वास है।

'अर्पित' में महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों एवं विद्यार्थियों की साहित्यिक, सांस्कृतिक सृजनात्मकता को यथोचित स्थान मिले।

महाविद्यालय परिवार को मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

(केशरी लाल वर्मा)

प्रति,

प्राचार्य,
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय,
गोवरा नवापारा, ग्राम तर्री,
जिला–रायपुर (छत्तीसगढ़)

Scanned with CamScanner

श्रीमती शारदा वर्मा, आई.ए.एस.
आयुक्त

उच्च शिक्षा संचालनालय,
छत्तीसगढ़
ब्लाक–03, तृतीय तल, इंद्रावती भवन,
अटल नगर, रायपुर (छ.ग.)492002
अर्द्ध शास. पत्र कमांक.....87.....
रायपुर, दिनांक ..29.08.2019
दूरभाष/फैक्स–0771–2263412, 2263411

:–: शुभकामना संदेश :–:

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, गोबरा नवापारा द्वारा प्रथम महाविद्यालयीन पत्रिका "अर्पित" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

(श्रीमती शारदा वर्मा)

प्राचार्य,
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय,
गोबरा नवापारा,
जिला रायपुर, (छ.ग.)

Scanned with CamScanner

क्षेत्रीय कार्यालय, अपर संचालक
उच्च शिक्षा, रायपुर
शासकीय नागार्जुन स्नात्तकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय परिसर, रायपुर (छ.ग.)
ई–मेल id:- regadddirrpr@gmail.com फोन न. 0771–2262939

पत्र क. 311/क्षे.अ.स./2019 रायपुर, दिनांक 04.09.2019

डॉ पी.सी.चौबे
अपर संचालक,
उच्च शिक्षा विभाग

::: संदेश :::

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा जिला–रायपुर द्वारा स्थापना के पश्चात प्रथम बार महाविद्यालय पत्रिका ''अर्पित'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की रचनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। इस पत्रिका में शोध आलेखों का समावेश किया है। छात्रों एवं पाठकों के लिए लाभप्रद होगा यह सराहनीय कार्य है।

मै ''अर्पित'' पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(डॉ पी.सी.चौबे)

Scanned with CamScanner

कार्यालय, आयुक्त उच्च शिक्षा संचालनालय

ब्लॉक सी 30 द्वितीय एवं तृतीय तल इंद्रावती भवन, अटल नगर, नवा रायपुर (छ.ग.)

डॉ. विनोद शर्मा,
संयुक्त संचालक,
उच्च शिक्षा विभाग

::: संदेश :::

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा जिला–रायपुर द्वारा "अर्पित" पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका अपना विशिष्ट महत्व है। छात्रों की सृजन शक्ति को महत्व देना प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रेरणास्पद होगी।

"अर्पित" पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं ।

(डॉ. विनोद शर्मा)

Scanned with CamScanner

प्राचार्य की कलम से

महाविद्यालय की विकास यात्रा : एक दशक

डॉ. आलोक शुक्ला

महानदी त्रिवेणी संगम और छत्तीसगढ़ की आध्यात्म एवं धार्मिक नगरी राजीव लोचन महाराज की धरा पर स्थित नवापारा (राजिम) में श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय, तर्री में स्थापित है। इस अंचल में लम्बे समय से शासकीय महाविद्यालय के स्थापना की मांग जनप्रतिनिधि एवं छात्र नेताओं द्वारा की जा रही थी। इस मांग के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग ने 24 अगस्त 2009 को शासकीय महाविद्यालय प्रारंभ करने की घोषणा की। प्रारंभ में तीन वर्ष तक यह महाविद्यालय शासकीय हरिहर उच्चतर माध्यमिक शाला में संचालित हुआ। 08 नवंबर 2012 को यह महाविद्यालय ग्राम तर्री में अपने नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित हुआ।

यह इस ग्रामीण अंचल के छात्र–छात्राओं के लिये महाविद्यालय वरदान साबित हुआ। लगभग 70 प्रतिशत छात्र–छात्राएं ग्रामीण अंचलों से अध्ययन के लिए आते हैं, जिसमें कुछ छात्र–छात्राएं 15 से 20 कि.मी. सायकिल चलाकर आते हैं। इस महाविद्यालय में छात्राओं की संख्या ज्यादा है। कुल प्रवेशित छात्र–छात्राओं में लगभग 60 प्रतिशत छात्राएं हैं। इस महाविद्यालय में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय की स्नातक स्तर की कक्षाएं एवं पी.जी.डी. सी.ए. तथा डी.सी.ए. की कक्षाएं संचालित है। महाविद्यालयीन छात्र–छात्राएं के लिए सिर्फ अकादमिक अध्यापन ही नहीं वरन् उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए अनेक गतिविधियॉं संचालित की जाती हैं। छात्र–छात्राओं में निहित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभाओं को तराशकर उन्हें मंच प्रदान किया जाता है कि ताकि वे अपनी प्रतिभा को निखार कर सकें। इसके कारण इनमें वक्तृत्व कला, नेतृत्व क्षमता, गायन एवं अभिनय क्षमता उभर कर सामने आती है।

गतिविधियॉं :– महाविद्यालय में 01 जुलाई से समस्त संकायों के प्रथम वर्ष का अध्यापन प्रारंभ हो जाती है। अन्य कक्षाओं के परिणाम आने के 10 दिन बाद प्रारंभ होती है। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के आयोजन में अंचल के वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सम्मान तथा छात्र–छात्राओं द्वारा देशभक्ति गीत एवं भाषण प्रस्तुत किया है। अगस्त तृतीय सप्ताह में शासन के निर्देशानुसार प्रावीण्यता के आधार पर छात्रसंघ का गठन किया जाता है। 05 सितंबर को छात्र–छात्राओं द्वारा प्राध्यापकों का सम्मान कर शिक्षक दिवस का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर को हिन्दी विभाग के तत्वाधान में हिन्दी दिवस का आयोजन किया जाता है।यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हिन्दी दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में दो बार स्मृतिशेष संत कवि पवन दीवान जी के काव्य पाठ से छात्र–छात्राएं लाभान्वित हुये। हिंदी दिवस के अन्य काव्य पाठ आयोजन में छत्तीसगढ़ी गीतों के गीतकार श्री मीर अली मीर ने सस्वर छत्तीसगढ़ी गीतों को प्रस्तुत कर छात्र–छात्राओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। छत्तीसगढ़ के साहित्यकार श्री अरविंद मिश्र जी अपने कविताओं की प्रस्तुति की। महाविद्यालय के वरिष्ठ छात्र–छात्राओं द्वारा अपने कनिष्ठों के लिए प्रभावी स्वागत समारोह का आयोजन किया जाता है। छत्तीसगढ़ शासन, उच्च शिक्षा विभाग के अकादमिक कैलेण्डर के अनुसार हर सत्र में तीन बार त्रैमासिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है ताकि छात्र–छात्राओं के अध्ययन की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। 02 अक्टूबर को गांधी जयंती सप्ताह में स्वच्छता अभियान चलाया जाता है जिसमें छात्र–छात्राएं महाविद्यालय परिसर एवं कक्षाओं की सफाई करते हैं। इसी कम में कक्षा सजावट प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र–छात्राओं जन जागरण रैली सायकिल रैली के द्वारा पौधरोपण, प्रकृति संरक्षण, उर्जा संरक्षण तथा उर्जा बचाओं का संदेश दिया जाता है। उन्नत भारत अभियान के अंतर्गत ग्राम तर्री को गोद लिया गया है। इस गांव में स्वास्थ्य शिविर, विधिक सहायक शिविर, कृषि शिविर आदि वृहत्त कार्यक्रम करने की योजना है।

महाविद्यालय द्वारा अक्टूबर अंतिम सप्ताह में राष्ट्रीय एकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसमें छात्रों को राष्ट्रीय एकता शपथ, राष्ट्रीय एकता व्याख्यानमाला, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता परिचर्चा

Scanned with CamScanner

आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। रानी लक्ष्मी बाई जयंती के अवसर पर महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं को उनके शौर्य गाथा से परिचित कराने की दृष्टि से रानी लक्ष्मी बाई के व्यक्तित्व की वृहत जानकारी दी जाती है। महाविद्यालय की छात्राएं लक्ष्मीबाई का रूप धारण कर साहस का संदेश देती है। महाविद्यालय छात्र–छात्राओं की अंग्रेजी को सशक्त करने की दृष्टि से अंग्रेजी कार्यशाला (23 नवंबर से 01 दिसंबर 2016) का आयोजन किया गया। जिसमें पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. चितरंजन कर जी को आमंत्रित कर दस दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। डॉ कर ने "आओ अंग्रेजी सीखें पर केन्द्रित कार्यशाला में अंग्रेजी व्याकरण की वृहत जानकारी दी। रोजगारन्मुखी पाठ्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2016–17 में पी.जी. डी.सी.ए. एवं डी.सी.ए. की कक्षाएं प्रारंभ हुई। इस पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण छात्रों को शासकीय, अर्द्धशासकीय एवं निजी संस्थाओं में रोजगार की प्राप्ति हुई। बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं लाभान्वित होते है।

कीड़ा गतिविधियॉ :– महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिए कीड़ा प्रतियोगिताओं में 100 मी. – 200मी. दौड़, गोला फेंक, भाला फेंक, तवा फेंक, उंची कूद, लम्बी कूद आदि व्यक्तिगत स्तर की स्पर्धाएं होती हैं। समूह कीड़ा में बैडमिंटन, क्रिकेट, कबड्डी, खो–खो आदि कीड़ा स्पर्धाओं से छात्र–छात्राएं लाभान्वित होते हैं। छात्र–छात्राएं सेक्टर स्तर एवं विश्वविद्यालयीन स्तर प्रतियोगिताओं में प्रतिनिधित्व करते हैं।

रेडकॉस :– महाविद्यालय में यूथ रेडक्रॉस इकाई संचालित है। रेडक्रास के तत्वाधान में प्रतिवर्ष ब्लडग्रुप, सिकलसेल का जांच किया जाता है। सिकलसेल के पासिटिव ग्रुप वाले छात्रों को स्थायी निदान हेतु जानकारी दी जाती है।

महाविद्यालय में नियमित व्याख्यानमाला आयोजित की जाती रही है जिसमें संत कवि स्मृतिशेष पवन दीवान जी, डॉ. अरूणा पल्टा, प्राचार्य, श्री एस.के. मिश्रा (पूर्व नियंत्रक, लोक सेवा आयोग), डॉ. आभा मिश्रा, डॉ. एस.के. पाण्डे (पूर्व कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर) डॉ. चितरंजन कर (सेवा निवृत्त प्राध्यापक, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर), डॉ. जाधव (पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर), डॉ. उषा किरण अग्रवाल आदि को विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

महाविद्यालय के भावी योजनाओं में हिंदी, राजनीतिशास्त्र, भूगोल, वाणिज्य, रसायनशास्त्र, विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं एम.एस. डब्ल्यू, आदि कक्षाएं प्रारंभ करने हेतु शासन से दो आवेदन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त छात्रों की निरंतर बढ़ती संख्या में देखते हुए अतिरिक्त कक्षाओं के निर्माण, बाउंड्री वॉल, डोम आदि निर्माण को पत्र शासन को पत्र प्रेषित किया गया है।

महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए हमारा निरंतर प्रयास होता है कि उनके संपूर्ण व्यक्तित्व विकास कर उनमें आत्मविश्वास एवं दृढ़ ईच्छा शक्ति की भावना का विकास करें ताकि वे देश एवं समाज के लिये समर्पित होकर कार्य कर सकें। दुष्यंत जी ने ठीक ही कहा है –

"कौन कहता है आकाश में सुराग हो नहीं सकता ?
एक पत्थर तो दिल से उछालों यारों ....."

■■■

"तुम क्या जानो कोई तुम पर महाकाव्य लिखता है,
मुझे खेद है दर्द तुम्हारा बिन मोल बिकता है
केवल नारीं नहीं देश की खुशहाली की रानी
शीर्षक हो तुम और तुम्हारी वह मासूम कहानी"
– स्मृमि शेष संत कवि पवन दीवान–

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	कुलेश्वर महादेव अध्यात्मिक महत्व	डॉ. रमाकांत शर्मा	17
2.	चित्रोत्पला एवं राजिम	डॉ. प्रशांतभूषण हरिहरनो	19
3.	श्री राजिम की महत्ता	प्रीतिबाला सेन	20
4.	पं. सुंदरलाल शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व	कु. कल्याणी कंसारी	22
5.	संत कवि पवन दीवान	श्रीमती मंजू शर्मा	24
6.	महाविद्यालय की मधुर स्मृतियॉ	डॉ. श्रीमती विनोद शर्मा	26
7.	मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आयेंगे	डॉ. आलोक शुक्ला	27
8.	"खाद्य अपमिश्रण के सामान्य परीक्षण"	डॉ. मधुरानी शुक्ला	29
9.	गुरू की महानता	कु. राधा साहू,	30
10.	कविता का जन्म	कु. ममता पटेल,	30
11.	प्रबंध : प्रकृति तथा मानव	श्री एस. आर. वड्डे	31
12.	स्वामी विवेकानंद एवं युवा	श्री ए. के. गुप्ता	32
13.	कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है	श्री राजू रजक	33
14.	निजता का अधिकार	प्रकाश चंद जांगड़े	34
15.	Biological clocks	Dr. Razia Sultana	35
16.	"Life"	Ankit Verma, Ex. Student	40
17.	impact of various toxicants	Dr. (Mrs.) Madhurani Shukla	37
18.	"मरने के बाद भी जिंदा रह सकती हैं हमारी आंखे"	नीत कुमार टंडन	40
19.	"छत्तीसगढ़ी जनउला (पहेली)"	कु. काजल पाटकर,	41
20.	"कैंसर –उपचार से अच्छा है बचाव"	कु.लक्ष्मी वैष्णव	42
21.	"कैसे हुआ महीनों का नामकरण?"	कु. ओमेश्वरी साहू	43
22.	परिभाषा	श्री तेजेश्वर साहू	43
23.	एकता	कु. नेहा साहू	43
24.	लोक स्वास्थ्य उपयोगी मछलियां	कु. प्रियंका गुप्ता	44
25.	"भारत में जैव विविधता"	कु. रेणु सेन	45
26.	चिकित्सा सेवा की सात पहली घटनाएँ	कु. पूर्णिमा साहू	47
27.	लापता की तलाश	कु. पुष्पा चकधारी	48
28.	"बेटियां"	कु. तामेश्वरी मानिकपुरी	48
29.	रात की बिदिया	श्री संजू वर्मा	48

Scanned with CamScanner

30.	मानवता	कु. सीमा साहू	49
31.	बातें काम की	श्री पोखराज साहू	50
32.	मोर छत्तीसगढ़	श्री पुरानिक राम साहू	50
33.	"सशक्त नारी"	कु. ईशा साहू	51
34.	विचित्र, किन्तु सत्य	विशाल शर्मा	52
34.	माँ	श्री पप्पू सेन	53
35.	जय छत्तीसगढ़ राज	श्री राहुल इसरानी	53
36.	"छत्तीसगढ़ महिमा"	श्री अरूण पैगम्बर,	54
37.	कौन तुम्हें अबला कहता है	श्री योगेश साहू	54
38.	वेद और उनका स्वरूप	श्री नरेश चक्रधारी	55
39.	अनमोल वचन	कु. ममता पटेल	56
40.	वक्त	श्री मोहित ध्रुव	56
41.	कम्प्यूटर वायरस	श्री खुलेश्वर प्रसाद मिश्रा	57
42.	"रसोई और आप"	श्रीमती लक्ष्मीन निषाद	58
43.	महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं कर्मचारीगण		59
46.	कर्मचारीगण		59
46.	अखबार की कतरनें		60

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय के गौरव

डॉ. मधुरानी शुक्ला,
(महाविद्यालय की प्रथम पी.एच.डी. धारक)

श्री इंद्रजीत सेन
(छत्तीसगढ़ शासन - विप्स, बालोद कलेक्ट्रेट में ई-डी.एम.)

कु. कल्याणी कंसारी
(एम.लिब- प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान)

कु. दामिनी साहू
अंतर्राष्ट्रीय योग "बुल्गारिया" में गोल्ड मैडल

श्री रेवेन्द्र साहू
भारतीय थल सेना

श्री नीत कुमार टंडन
छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल

श्री के.के. साहू
छत्तीसगढ़ पुलिस (जेल)

श्री भूपेन्द्र साहू
छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल

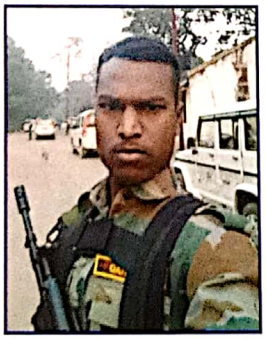

श्री गंगाराम साहू
छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल

प्रीतिबाला सेन
मतदाता जागरूकता कार्यक्रम एम्बेसडर

श्री विशाल शर्मा
सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता
(राष्ट्रीय सेवा योजना)

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

स्वास्थ्य शिविर में मान. विधायक श्री धनेन्द्र साहू जी संबोधित करते हुए।

स्वास्थ्य शिविर में ग्रामीणजनों का परीक्षण करते हुए।

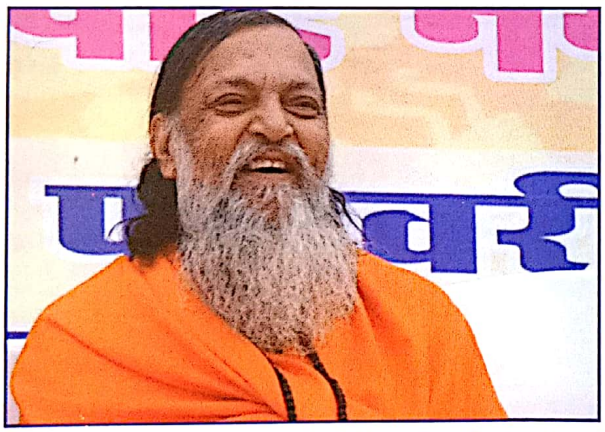

हिन्दी दिवस में स्मृति शेष संत कवि पवन दीवान काव्य पाठ करते हुये।

पुरस्कार वितरण समारोह।

टेबलेट वितरण समारोह में पूर्व मंत्री मान. श्री प्रेमप्रकाश पांडेय जी।

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

चंद्रशेखर आजाद की पुण्यतिथि पर प्राचार्य डॉ. विनोद शर्मा संबोधित करते हुये।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन - 6

वार्षिक स्नेह सम्मेलन - 7

रूसा कार्यशाला में पूर्व अपर संचालक डॉ. अंजनी शुक्ला का स्वागत करते हुये पूर्व प्राचार्य डॉ. विनोद शर्मा

रूसा कार्यशाला

स्वच्छता अभियान
महाविद्यालय परिसर

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

वार्षिक क्रीड़ा उत्सव।

राष्ट्रीय एकता के लिये दौड़।

विधिक साक्षरता शिविर।

वार्षिक स्नेह सम्मेलन - 8

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर।

मेहन्दी प्रतियोगिता।

Scanned with CamScanner

कुलेश्वर महादेव–आध्यात्मिक महत्व

आचार्य डॉ. रमाकांत शर्मा,

राजिम एक ऐसी धर्म नगरी है जिसे इतिहास ने धार्मिक संस्कारों से सहेजा है। यहां कण–कण में शंकर और रोम रोम में राम बसते हैं। इस ऐतिहासिक नगरी का अपना अलग ही महत्व है। यहां कई प्राचीन मंदिर हैं, उन मंदिरों में सम्मिलित हैं, एक अद्‌भुत प्राचीन कुलेश्वर मंदिर है।

माता सीता ने बनवाया था मंदिर

मंदिर को लेकर कई किवदंतिया प्रचलित है, लेकिन मंदिर की खुदाई में जो प्रमाण मिले हैं वो मंदिर के प्रति हमारी आस्था को और अधिक दृढ़ कर देते हैं। सीताबाड़ी में खुदाई में मिल रहे 2200 साल से भी पुराने अवशेप से ये बात पुख्ता होती है कि सीता माता द्वारा स्थापित किया हुआ कुलेश्वर महादेव का शिवलिंग, वहां की पुरातन कलाकृतियां फिर राजीव लोचन मंदिर और फिर रहस्यमयी सुरंगे जिसका सैकड़ो साल पुराना इतिहास है।

कुलेश्वर नाथ मंदिर –

रामायण के अनुसार भगवान शिव जनककुल के कुलदेव हैं। दण्डक वन में घूमते हुए मॉ सीता ने अपने मायके के कुल देव भगवान शिव की पूजा की थी। यह भी माना जाता है कि मॉ सीता ने बालू से शिवलिंग की स्थापना की थी, तथा जलाभिषेक करते समय शिवलिंग पंचाभिमुख हो गया था। मंदिर अत्यंत प्राचीन है तथा तीन नदियों की धारा में स्थित है। पून्नी मेला में बड़ी संख्या में साधु संत तथा आसपास के गावों के लोग इसमें भाग लेते हैं तीन नदियों का संगम होने के कारण बड़ी संख्या में श्रृद्धालु स्नान करने आते हैं, पैरी, सोंढुर तथा महानदी का संगम लोगों के लिए श्रृद्धा का केन्द्र हैं। माना जाता है कि श्री राम–लक्ष्मण एवं सीताजी ने यहां स्नान किया था। यह स्थान राजीव लोचन मंदिर से लगभग 2 कि.मी. दूर स्थित है।

महादेव का मंदिर जिसे स्वयं माता सीता ने त्रेता युग में स्थापित किया था। बताया जाता है कि कुलेश्वर महादेव का अस्तित्व रामेश्वरम से भी पुराना है। भगवान श्री राम सीता मैया और अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ इसी रास्ते से होते हुए वनवास गए थे। कुलेश्वर महादेव की बनावट और इसमें दुर्लभ कलाकृति साफ तौर पर पुरातन काल को दर्शाती है।

कुलेश्वर महादेव मंदिर के महामंडप की पार्श्व भित्ति पर एक शिलालेख है। पाश्चात्य पुरातत्व वेत्ता वेलगार ने इसे 8वीं –9वीं शताब्दी का निर्मित माना है। राजीव लोचन महात्म के अनुसार यह सीमांत जगतपाल के द्वारा प्रतिष्ठित माना है। मंदिर का सम्पूर्ण भाग चारों ओर से बंधा हुआ है। बरसात में नदी की बाढ़ से उसकी रक्षा के लिए मंदिर के चबूतरें को अष्ट भुजाकार रूप में बनाया गया है। यह चबूतरा उपर की ओर क्रमशः सकरी होती गई है। जितनी उॅचाई पर मंदिर है उससे भी अधिक मंदिर के नीचे नींव मजबूत पत्थरों से घिरा हुआ है। यह वस्तुशास्त्रीय तकनीकी ज्ञान की परिपक्वता का परिचायक है। चबूतरा 17 फूट उंचा है, तथा इसके निर्माण में अपेक्षाकृत छोटे–छोटे आकार के पत्थरों का प्रयोग किया गया है। 1967 में राजिम में बाढ़ आई थी तब इस मंदिर का प्रायः सम्पूर्ण भाग डूब गया था, केवल कलश भाग दिखाई देता था। पानी के तीव्र बहाव को देखकर ऐसा लगता था कि जलधारा तेजी से अंदर जाकर चबूतरे से टकराकर कहीं मंदिर को क्षति न पहुंचा दे पर उस भयंकर बाढ़ में भी इसकी मजबूती एवं नीव अप्रभावित रही। इससे इसकी मजबूती का अनुमान लगाया जा सकता है।

माद्य पूर्णिमा से माद्य शिवरात्री पर यहां मेला भरता है। श्रद्धालु जल विभिन्न धार्मिक कृत्य मुंडन, पूजन, अस्थिविसर्जन आदि सम्पन्न करने यहां पहुंचते है, तथा कुलेश्वर भोलेनाथ उन्हें आत्मिक शांति प्रदान करते है। चबूतरे पर पीपल वृक्ष श्रृद्धालुओं को अनंत शांति प्रदान कर भगवान शंकर के यशोगान को प्रमाणित करता है।

मंदिर के प्रवेश द्वारा पर सिंह की 2 मूर्तियां है, मंदिर के सामने भगवान शंकर का वाहन नंदी जी पालकी मारे शिव की रक्षा एवं आदेश हेतु तत्पर है। मंदिर गर्भगृह में प्रवेश करने के पूर्व दायी ओर काल भैरव एवं दुर्गा की मूर्ति अंकित है। बॉयी ओर काल भैरव एवं दुर्गा की मूर्ति अंकित है। बॉयी ओर माता पार्वती शंकर भगवान की पूजा में लीन है। आज भी मंदिर की सुंदरता वैसी ही है, जितनी वर्षो पूर्व थी। दुर्ग के राजा

Scanned with CamScanner

जगतपाल ने इस मंदिर का निर्माण एवं जीर्णोद्धार कराया था। प्रवेश की बांयी ओर पार्श्वभित्ति पर मयूरासीन स्वामी कार्तिकेय की मूर्ति है। गर्भगृह में कुलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध शिवलिंग है गर्भ गृह में दूसरी एक प्रतिमा जगदम्बा की है। मंदिर के चबूतरे पर एक विशाल पीपल वृक्ष है जिसे लगभग पांच सौ वर्ष पुराना बताया जाता है। नदी के जल के वेग से मंदिर चबूतरे की रक्षा करने में इसका विशेष योगदान है। कुलेश्वर मंदिर के चबूतरे पर चढ़ने के लिए उत्तर, दक्षिण एवं पूर्व में तीन सीढ़ियां बनी हुई है। ये तीनों सीढ़ियां तीन जिलों का प्रतिनिधित्व करती है। पूर्व में राजिम तहसील, गरियाबंद जिला, उत्तर में रायपुर जिला एवं दक्षिण में धमतरी जिला है। दर्शनार्थी अपनी सुविधानुसार किसी भी दिशा में बनी सीढ़ियों पर चढ़कर चबूतरे के उपर जा सकता है। परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करें तो तीन दिशाओं में निर्मित इन सीढ़ियों का भी अपना विशेष महत्व है। दर्शनार्थी उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं में स्थित सीढ़ियों पर चढ़कर कुलेश्वर महादेव का दर्शनकर कमल क्षेत्र के स्वामी भगवान राजीवलोचन की ओर मुंह करके पूर्व दिशा में निर्मित सीढ़ियों से नीचे उतरे । राजिम स्थित जितने भी देवालय है, प्रायः सभी के मुख्य द्वार या तो चित्रोत्पला की ओर है या भगवान राजीवलोचन की ओर। राजिम के त्रिवेणी संगम के बीच में वर्षो से टिका कुलेश्वर महादेव मंदिर प्राचीन भवन निर्माण तकनीक का जीवंत उदाहरण है। तीन नदियों के संगम के कारण राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता है। राजिम में पैरी, सांढूर, और महानदी का संगम है। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से मात्र 45 किलोमीटर दूर स्थित राजिम में नदी पर बना पुल 40 साल भी नहीं टिक पाया। जबकि वहीं आठवी सदी का कुलेश्वर महादेव मंदिर आज भी खड़ा है।

मंदिर का दर्शन करने देशभर के लोग यहां पहुंचते है। राजिम में नदी के एक किनारे पर भगवान राजीवलोचन मंदिर है और बीच में कुलेश्वर महादेव का किनारे पर एक और महादेव मंदिर है। जिसे मामा का मंदिर कहा जाता है। कुलेश्वर महादेव मंदिर को भांजे का मंदिर कहते है।

किवदंति है कि बाढ़ में जब कुलेश्वर महादेव का मंदिर डूबता था तो वहां से आवाज आती थी। मामा बचाओ। इसी मान्यता के कारण यहां आज भी नांव पर मामा भांजे को एक साथ सवार नहीं होने दिया जाता है। नदी किनारे बने मामा का मंदिर के शिवलिंग को जैसे ही नदी का जल छूता है उसके बाद बाढ़ उतरनी शुरू हो जाती है।

इसके समीप स्थित बेलाही लोमश ऋषि आश्रम के नाम से प्रख्यात है। लोमश ऋषि के आश्रम में तपो भूमि की नीरवता तो है ही, यह एक अच्छा पर्यटन स्थल भी है। यहां अनेक महात्माओं की समाधियां भी बनी हुई है। माद्य पूर्णिमा एवं महाशिवरात्री जैसे पावन पर्वों पर कुलेश्वर मंदिर श्रद्धालुओं के आस्था के महत्वपूर्ण केन्द्र बन जाता है। जन समूह के जयक्षेप से आकाश गूंजायमान होते रहता है। दूर–दूर तक घंटो का स्वर सुनाई पड़ने लगता है। कहीं मुंडन कराया जा रहा है तो कही होम हवन हो रहा है। कहीं कथाएं चल रही है। जिससे सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय हो जाता है। सचमुच महर्षि लोमश का कथन

दुर्लभ भारते जन्म, दुर्लभं शिवपूजनम्
दुर्लभं जाहनवी स्नानं, शिवे भक्ति सुदर्लभे।।

भारत में जन्म, भगवान शिव का पूजन, गंगा स्नान एवं शिव भक्ति अत्यंत दुर्लभ है।

जय जय कुलेश्वर महादेव। हर हर महादेव।

संदर्भ – वनवासी राम, राजिम दर्शन, कमल क्षेत्र राजिम, प्रिंट मिडिया राजिम महात्म

■■■

"अरूण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्मविभा पर नाच रही तरू–शिखा मनोहर
छिटका जीवन–हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा।"

– जयशंकर प्रसाद–

Scanned with CamScanner

चित्रोत्पला व राजिम

डॉ. प्रभात भूषण हरिहरनो

1972 में मैं अपने साथियों के साथ पहली बार स्थानीय नये महाविद्यालय में साक्षात्कार के लिए आया और यही का ही कर रह गया। रायपुर में रचे बसे व्यक्ति के लिए यहॉ बसने का निर्णय करना अन्य के लिए अजीब सा था। लेकिन यह सच है कि महानदी की कलकलकी धारा व राजिम ने मुझे मिलते ही जकड़ लिया।

1972 की महानदी तथा राजिम आज पूरी तरह बदल गये है। चित्रोत्पला यहॉ की जीवनधारा है। राजिम एक प्रमुख विशेषता यहॉ के कुओं का खारा होना है। उस काल में केवल श्री राजीव लोचन मंदिर में स्थित कुऑ ही मीठे जल की आपूर्ति करता था। आज शासन के द्वारा पेयजल की व्यवस्था किये जाने से जरूर इस कुएं का महत्व कम हुआ है।

राजिम व महानदी एक दूसरे से जुड़े हुए है। इसी राजिम व महानदी ने इतने सालों में अनेकों परिवर्तन देखें है, इसका मैं व समूचा नगर साक्षी है। राजिम जहॉ शहर का रूप ग्रहण कर चुका है तो महानदी अपने परिवर्तन से दुखी है। आज नदीं में पानी दिखाई ही नहीं देता है। हर स्थान पर मुरम व बेशरम की झाड़ियां ही दिखाई देती है। इस दशा के लिए हम सभी जिम्मेदार है।

1972 तक बहने वाली महानदी की धारा आखिर कहॉ लुप्त हो गयी, इस पर बात की जाये। छत्तीसगढ़ में धान की खेती कम वर्षा की कमी से हमेशा ही प्रभावित होती रहती थी। इससे क्षेत्र के किसानों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती थी। अतः अवर्षा से निपटने के लिए बांध निर्माण की रणनीति बनाई गई। महानदी पर विशाल गंगरेल बॉध बनाया गया तथा पैरी पर सीकासेर बॉध बनाया गया। इससे खेत तो सुरक्षित हो गये लेकिन महानदी की कीमत पर। जलधारा पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। रही सही कसर हर 15–20 किलोमीटर पर बने एनीकेटों ने पूरी कर दी। फलस्वरूप महानदी का यह क्षेत्र मरूस्थल सा प्रतीत होता है।

राजिम का महत्व महानदी से जुड़ा है। अब इसका विकास करने की जरूरत है। फिलहाल निर्णय लिया गया है कि महोत्सवों में मुरम की सड़क नहीं बनाई जाएगी। महानदी के क्षेत्र में मिलों का गंदा पानी मिलता है, इसे भी गंभीरता से रोका जाना चाहिए। राजिम के पुराने वैभव को लाने के लिए आज की युवा पीढ़ी को जागरूक होना होगा। यदि हम पूरी दृढ़निष्ठा से प्रयास करें तो इसे दिया गया प्रयाग राज का दर्जा वापस मिल सकता है।

सम्पूर्ण भारत के भ्रमण के दौरान उत्तर व दक्षिण भारत की नदियों में पानी देख कर मुझें शक होता है कि काश हमारी चित्रोत्पला भी ऐसी होती।

माता कौशल्या की जन्मधरा व श्रृंगि ऋषि के आदेश से निकली महानदी की दुर्दशा अब देखी नहीं जाती है। जल्दी से जल्दी इसके उद्धार के लिए प्रयास किये जाने चाहिए, ताकि हम इसके गौरव को लौटा सकें।

पूर्व प्राचार्य
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय
महाविद्यालय गोबरा नवापारा

■■■

"मैं तुमसे हूँ एक, एक है
जैसे रश्मि आलोक
मैं तुमसे हूँ भिन्न भिन्न ज्यों
धन से जड़ित विलास।"
– महादेवी वर्मा –

Scanned with CamScanner

राजिम की महत्ता

– कु. प्रीतिबाला सेन
(पूर्व छात्रा)

राजिम में श्री राजीव लोचन भगवान की विग्रह मूर्ति बड़ी अद्‌भुत है। इसके एक कोने में कमल नाल को अपनी सूंड़ में पकड़े गजराज को उत्कीर्ण दिखाया गया है। यह अपने आप में अद्‌भुत है। श्री विष्णु की चतुर्भुज मूर्ति में गजराज के द्वारा कमल की भेंट और कहीं नहीं मिलती । इसके द्वारा इस क्षेत्र की वैष्णव परंपरा को एक नया संदेश देने का प्रयास किया गया है। लोकमत भी इसी मान्यता को बल देता है। उसके अनुसार – गजेन्द्र मोक्ष की प्रसिद्ध पौराणिक घटना राजिम क्षेत्र में ही घटित हुई थी। ग्राह के द्वारा प्रताड़ित गजराज ने अपनी सूंड़ के द्वारा कमल के फूल को भगवान राजिव लोचन महाविष्णु को पूर्ण भक्ति के साथ अर्पित किया था। पौराणिक कथा के अनुसार इस कमल फूल के द्वारा गजराज ने अपनी सारी वेदना ही भगवान के सामने निवेदित की थी। भगवान उस समय शेष शय्या पर विश्राम कर रहे थे। महालक्ष्मी उनके पैर दबा रही थी। कमल फूल के रूप में भक्त गजराज की पीड़ा को देखते ही भगवान ने तुरंत उठकर नंगे पैर दौड़ते हुए राजिम क्षेत्र में पहुंचकर गजराज की रक्षा की थी। शरणागत की सुरक्षा के महान वैष्णव भाव को द्योतन इसके द्वारा हुआ है। यह क्षेत्र वैष्णव और शैव महत्ता का वाचक बनकर एक नए दार्शनिक सत्य की ओर भी तथ्य प्रस्तुत करता है। राजिम की पंचकोशी में महर्षि लोमश का वह बेलाही क्षेत्र भी आता है, जहॉ आज भी बेल के पेड़ बहुतायत में मिलते हैं। महर्षि ने शिव एवं विष्णु की एकरूपता स्थापित करते हुए हरिहर की उपासना का महामंत्र दिया है। बिल्व पत्र में विष्णु की श्री शक्ति को अंकित कर शिव को अर्पित करने के निर्देश उन्होंने दिए है। श्री कुलेश्वर महादेव की अर्चना आज भी इसी अद्‌भुत शैली में हुआ करती है। यह छत्तीसगढ़ की अपनी समरसता और धार्मिक सद्‌भाव का उदाहरण है। विष्णु की महत्ता को शिव के साथ जोड़कर उसे अद्वितीय गौरव दिया गया है। जैसा कि उपर कहा जा चुका है कि कुलेश्वर महादेव मंदिर हमारी पुरातन वास्तुकला का चमत्कार है। प्रलयंकारी बाढ़ों और तीव्र धाराओं में अड़िग यह मंदिर छत्तीसगढ़ के तीन जिलों को जोड़ता भी है। यहॉ की मूर्ति का नाम उत्पलेश्वर है। यहीं से महानदी चित्रोत्पला का नाम धारण करती है। प्रयाग के त्रिवेणी संगम के समान यहॉ भी माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक कल्पवास किया जाता है। वृंदावन की शैली से यहॉ भी पंचकोशी की यात्रा की जाती है। राजीवलोचन के मंदिर के शीर्ष में अवस्थित वास्तुचिन्ह को पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के बोध चिन्ह के रूप में मान्यता दी गई है।

राजिम क्षेत्र की वैष्णव परंपरा आज भी अपने अभिनव रूप में विद्यमान है। राजिम का रेल्वे स्टेशन महानदी के तट पर नवापारा में है। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण वर्ष में ही इसी रेल्वे स्टेशन के पास दम्मानी गली में श्री गोवर्धननाथ जी के विशाल हवेली मंदिर का निर्माण हुआ है। परम पूज्य गोस्वामी मथुरेश्वर जी महोदय की प्रेरणा के फलस्वरूप श्री वल्लभ विट्‌ठल सेवा निधि एवं श्री गोवर्धननाथ जी स्वाध्याय सत्संग मंडल राजिम के द्वारा इसकी सारी व्यवस्था की जाती है। भविष्य में इसके विराट स्वरूप की कल्पना आज के निर्माण के द्वारा ही की जा सकती है। भगवान श्रीकृष्ण के गोवर्धननाथ जी के स्वरूप का भव्य दर्शन यहॉ होता है। उसी प्रकार से श्रीनाथ जी की व्रज में स्थित 4 बैठक और 12 चौंकियों को भी यहॉ पर स्थापित कर वैष्णव परंपरा को रेखांकित किया गया है। यहॉ प्राचीन भगवान कृष्ण एवं शिव को समर्पित रेखराज मंदिर में वैष्णव परंपरा कायम है। इसके प्रथम पाटोत्सव महामहोत्सव के अवसर पर सेवा–स्नेह और समर्पण का पखवाड़ा 23 फरवरी 2002 तक चलता रहा है। भगवान के साथ उनके भक्तों को भी यहॉ महत्व दिया गया है। उसी के अंतर्गत पुष्टि मार्ग के प्रथम वैष्णव दामोदर दास हरसानी का जन्म महोत्सव अभी हाल ही में यहॉ मनाया गया है।

राजिम में राजीवलोचन मंदिर के निकट ही प्राचीन मंदिर विद्यमान है। छत्तीसगढ़ में गांधी के नाम से प्रसिद्ध पं. सुंदरलाल शर्मा ने गांधी जी की वैष्णव परम्परा के अंतर्गत 23 नवंबर 1925 को इसी मंदिर में हरिजन प्रवेश कराया था। इस प्रकार से इस क्षेत्र के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ वैष्णव परंपरा के योगदान में इस मंदिर का ऐतिहासिक महत्व है। पं. सुंदरलाल शर्मा के लघु काव्य श्री राजीव लोचन क्षेत्र महात्म्य के द्वितीय संस्करण की भूमिका (दो शब्द) में इसका उल्लेख है। डॉ.

Scanned with CamScanner

हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. विवेकदत्त झा ने राजिम क्षेत्र से संबंधित प्राचीनतम पुरावशेष को अपने शोध में सुनिश्चित किया है। इसी तथ्य को पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने अन्य विद्वानों के साथ राजिम पर सर्वप्रथम खोज परक ग्रंथ का उल्लेख करते हुए घोषित किया है – गुप्तकाल में दक्षिण कोशल के राजा महेन्द्र के साथ समुद्रगुप्त का इसी क्षेत्र में युद्ध हुआ था। विजयी समुद्रगुप्त के राजीवलोचन क्षेत्र को अपने साम्राज्य में सम्मिलित करते हुए चौथी शताब्दी में ही यहॉ वैष्णव धर्म के विकास में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया था। ज्ञातव्य है कि गुप्त साम्राज्य की पताका में गरूड़ का चिन्ह वैष्णव परम्परा का ही द्योतक है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अप्रतिम विद्वान श्री विष्णु सिंह ठाकुर ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'राजिम' में अनेक अनछुए प्रकरणों का उल्लेख किया है।

पंचकोशी में चम्पारण्य का प्रसिद्ध क्षेत्र भी आता है। जहॉ महान कृष्ण भक्त महाप्रभु वल्लभाचार्य ने जन्म ग्रहण किया था। वास्तव में काशी विश्वनाथ से दक्षिणी भारत की ओर जाने का सुरक्षित प्राचीन राजमार्ग चम्पकेश्वर और राजिम होकर ही जाता था। इसी कारण महाप्रभु वल्लभाचार्य के पिता श्री लक्ष्मण भट्ट अपनी पत्नी इल्लमा तथा अन्य परिजनों के साथ अपने घर तेलंगाना की ओर इसी मार्ग से यात्रा कर रहे थे। उनकी पत्नी गर्भवती थी। यहीं उनका गर्भस्त्राव हो गया। बच्चा निर्जीव लगता था। उसे विशाल वृक्ष की छाया में पत्तों पर लिटा दिया गया। पर दूसरे दिन वही बालक पैर का अंगूठा चूसता वहीं पर खेलता मिला था। यही बालक बाद में वैष्णव भक्ति की शुद्धाद्वैत धारा का प्रवर्तक बना, जिसे आज पुष्टि मार्ग के नाम से जाना जाता है। आचार्य वल्लभ के नाम से वे प्रसिद्ध हुए। इन्होंने वेदांत की तर्क संगत सरल व्याख्या प्रस्तुत की। इसके अनुसार जीव, जगत और आत्मा को बराबर का महत्व दिया गया हैं । संवत् 1535 की इस घटना को महत्व देते हुए आज चम्पारण्य बड़ा भारी वैष्णव तीर्थ बन गया है। श्री वल्लभाचार्य को भगवान विष्णु का अंशावतार माना जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के वंशजों की भी बड़ी श्रेष्ठ पंरपरा है। उनका प्रभाव इस क्षेत्र में दिखलाई पड़ रहा है। एक से एक प्रतिभाशाली आकर्षक व्यक्तित्व वाले महान वैष्णवों की परंपरा वल्लभ कुल से हमें प्राप्त है। वे निरंतर इस क्षेत्र में पधारते रहते हैं। गोसाई आचार्य श्री विट्ठल के वंश की छठी शाखा की अट्ठारवी पीढ़ी में आज पूज्य गोस्वामी श्री मथुरेश्वर जी महोदय देश–विदेश में इस वैष्णव धाम के यश को विस्तार देते चले जा रहे हैं। उनकी पंरपरा के वैष्णव भक्त इस क्षेत्र को महातीर्थ मानकर यहॉ दर्शन के लिए आते हैं। आज यह छत्तीसगढ़ का बड़ा पर्यटन केन्द्र बन गया है। अभी हाल ही में 'श्रीमद् वल्लभाचार्य धर्म–संस्कृति शोध अन्वेषण संस्थान' के नाम से यहॉ एक निजी विश्वविद्यालय की स्थापना पूज्य गोस्वामी श्री मथुरेश्वर जी के द्वारा की गई।

■■■

"शब्द सूना हो तो अब लौट कहाँ जाँऊ?
उन चरणों को छोड़कर और शरण कहाँ पाँऊ?
बजे सजे उर के इस सुर के सब तार"
–पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'–

Scanned with CamScanner

पं. सुंदरलाल शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

–कु.कल्याणी कंसारी
शोध छात्रा (एम लिब)

पं. सुंदरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय तथा राजनीतिक जागरण लाने का भागीरथ प्रयास किया और स्वाधीनता में यह कभी न बुझने वाली अग्नि प्रज्जवलित की। पं. सुंदरलाल शर्मा जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। जिसमें छत्तीसगढ़ी, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, बंगला, उड़िया आदि भाषाओं में सिद्धहस्त थे। उन्होंने घर मे ही इन भाषाओं का अध्ययन किया। पं. सुंदरलाल शर्मा जी लोकमान्य तिलक जी से सर्वाधिक प्रभावित थे। पूना से तिलक जी द्वारा संपादित ''केसरी'' तथा ''मराठा'' आदि पत्रिकाएं मंगाकर अध्ययन करते थे। शर्मा जी की रंगमंच एवं नाट्य लेखन विधा में भी रुचि थी। राजिम में पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने मात्र 16 वर्ष की आयु में काव्य सृजन प्रारंभ किया। सन् 1898 में ''रसिक मित्र'' पत्रिका में उनकी कविताएँ प्रकाशित होने लगी। अपने साहित्यिक मित्र पं. विश्वनाथ दुबे जी के साथ मिलकर साहित्य संस्था का गठन किया जो छत्तीसगढ़ की प्रथम साहित्य संस्था थी जिसने पूरे छत्तीसगढ़ में साहित्य चेतना जागृत की।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी सन् 1903 में कांग्रेस के सदस्य बने। छत्तीसगढ़ में उन्होंने ''स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार'' आंदोलन का पहली बार नेतृत्व किया। अगस्त 1920 में पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने छोटे बाबू के साथ मिलकर कण्डेल ग्राम में ''नहर सत्याग्रह आंदोलन' प्रारंभ किया। इस आंदोलन में पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को 2 दिसंबर 1920 को लेने गये तथा महात्मा गांधी को लेकर 20 दिसंबर 1920 को रायपुर आये। महात्मा गांधी को प्रथम बार छत्तीसगढ़ में लाने का श्रेय पं. सुंदरलाल शर्मा जी को है। महात्मा गांधी की सभा धमतरी में हुई। इस सभा में महात्मा गांधी ने ''नहर सत्याग्रह आंदोलन'' को सफल बनाने में पं. सुंदरलाल शर्मा, श्री नारायण मेघावाले, नत्थू जी जगताप तथा छोटेलाल बाबू की प्रशंसा की। सन् 1922 में ''जंगल से लकड़ी काटकर कानून का उल्लंघन कर सत्याग्रह'' आंदोलन चलाया। हरिजन उद्धार का नेतृत्व कर वृहत कार्य किया। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने धमतरी की सभा में पं. सुंदरलाल शर्मा को अपना गुरु स्वीकार किया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में आपने छत्तीसगढ़ की प्रतिनिधित्व किया इसलिए उन्हें आज भी ''छत्तीसगढ़ का गांधी'' कहकर स्मरण किया जाता है।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी का साहित्य पक्ष बहुत सशक्त है। मात्र 18 वर्ष उम्र में तीन काव्य ग्रंथों का सृजन किया जिसमें पहला संग्रह ''राजीव प्रेम पियुष'' द्वितीय काव्य संग्रह का नाम ''काव्य दिवाकर'' तथा तृतीय काव्य संग्रह ''राजिम क्षेत्र महात्मय'' जो लघु प्रबंध काव्य के रुप में ख्याति मिली। पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने प्रथम काव्य संग्रह में संस्कृत के छंदो एवं आल्हा के छंदो का सफल प्रयोग किया है। द्वितीय काव्य संग्रह में रस, छंद, अलंकार एवं लक्षणों का वृहत वर्णन है। तृतीय काव्य संग्रह में भगवान राजीव लोचन की महिमा कथा का वर्णन मिलता है। सन् 1904 में पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने ''प्रहलाद नाटक'' का सृजन कर छत्तीसगढ़ के अनेक नगरों में सफल मंचन कराया। सन् 1916 मे जबलपुर में सम्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन सुंदरलाल शर्मा जी द्वारा अपने प्रकाशित ग्रंथों ''हृदय तरंग'', ''रघुराज गुण कीर्तन'', ''करुणा पाचिसी'', ''ध्रुव चरित आख्यान'', ''विक्टोरिया वियोग'' एवं ''प्रहलाद नाटक'' को प्रदर्शित किया।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी द्वारा छत्तीसगढ़ी भाषा में ''छत्तीसगढ़ी दानलीला'' (महाकाव्य) छत्तीसगढ़ काव्य संग्रह के सृजन को काफी लोकप्रियता मिली। ''छत्तीसगढ़ी दानलीला' पर रायबहादुर हीरालाल ने प्रशंसा करते हुए लिखा है कि–''जउने हर एला बनाइस हे, तउने हर बनाय कमाइस हे।'' छत्तीसगढ़ दान लीला ने छत्तीसगढ़ में धूम मचा दी। छत्तीसगढ़ी दानलीला पर स्व. आचार्य नरेन्द्र देववर्मा ने कहा कि '' पं. सुंदरलाल शर्मा आधुनिक छत्तीसगढ़ी के पुरोधा एवं पुरुकर्ता है। वे सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ी को ग्राम्य भाषा पद से उठाकर साहित्यिक भाषा के पद पर अधिष्ठित और उसे मानवीय मनोभावों के संवहत योग्य प्रत्यास्थता प्रदान की। ''पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय जी ने कहा कि''– ''पं. सुंदरलाल शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विविध क्षेत्रों में उन्होंने सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। समाज सुधारक, राष्ट्रीय संग्राम के योद्धा, कवि–साहित्यकार के रुप में उनका योगदान अप्रितिय है।''

Scanned with CamScanner

पं. सुंदरलाल शर्मा "छत्तीसगढ़ी गांधी" के नाम से लोकप्रिय थे। वे एक देशभक्त समाजसुधारक, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं युग प्रवर्तक थे। पं. सुंदरलाल शर्मा जी साहित्य की हर विधा में हिन्दी साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य में सृजन किया जिसमें काव्य, जीवनी, नाटक, उपन्यास, कथा, संगीत, आख्यिका आदि प्रमुख है। हिन्दी ग्रंथों में "श्री राजीव प्रेम पियूष", "काव्य दिवाकर", "श्री राजिम महात्मय", "श्री विक्टोरिया वियोग", "स्फूट पद्य संग्रह", "भूषणकवि", प्रहलाद नाटक", "करुणा पचीसी" आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हुये। छत्तीसगढ़ी साहित्य में कुल 24 कृतियाँ प्रकाशित हुई जिसमें "छत्तीसगढ़ी दानलीला", छत्तीसगढ़ी रामायण (अप्रकाशित), कंस वध खंड काव्य (अप्रकाशित) है। इसके अतिरिक्त "ब्राम्हण गीतावली" तथा "सतनामी पुराण" प्रकाशित कृति है।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने अपने काव्यों में व्यक्तिगत भावनाओं एवं आकांक्षाओं को बखूबी वर्णन किया है। उदाहरण दृष्टव्य है–

"कबहूं सतसंग में रंग रहें, कबहूं उर आनंद ते बिहरें।
कबहूं कवि सुंदर काव्य करें, कबहूं उपदेशन को उबरें।।

छत्तीसगढ़ में हरिजनों की गरीबी से उनका मन करुणा से भर उठता। इसकी अभिर्व्यातक उन्होंने अपने "पतित प्रार्थना" नामक कविता में लिखा है–

"भैयों पतितों का उद्धार सदा करते रहो जी।
बिछड़े, पतन हुये लोगों को उपर लेतु उठाय।।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी ने अपने समय में हरिजनों को छाती से लगाने के कारण कट्टरपंथी हिन्दुओं के विरोध का सामना करना पड़ा तब वे कहते हैं यथा–

"भले बदनाम करें बदलोग, अरे बरबाद चाहें होय जावो।
देश के हेव से देश निकाल दें, हर्ज नहीं कछु हाँसत जावो।।

"छत्तीसगढ़ी दानलीला" काफी लोकप्रिय है। इसमें भगवान कृष्ण को सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है यथा–

"कोनो जनन लगाय के, देते श्याम मिलाय।
धोकर–धोकर के रात दिन, परतेंव तोरेच पांव।।

पं. सुंदरलाल शर्मा जी का हर क्षेत्र चाहे साहित्य हो, समाज सेवा, राजनीति इतना वृहत है कि उसे एक लेख में समेटना असंभव है। ऐसे महामना व्यक्तित्व के प्रति अपना प्रणाम निवेदित करती हूँ।

■■■

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान,
उमड़कर आँखों से चुपचाप वही होगी कविता अनजान"
–सुमित्रानंदन पंत–

Scanned with CamScanner

संत कवि पवन दीवान

–श्रीमती मंजू शर्मा

छत्तीसगढ़ में राजिम नगरी प्रारंभ से ही धर्म–अध्यात्म एवं आस्था की नगरी रही है। यह धार्मिक स्थान त्रिवेणी संगम से भी प्रतिष्ठित है जिसमें महानदी, सोंढूर एवं पैरी नदी का संगम स्थल है। धार्मिक नगरी होने के कारण प्रारंभ से ही यहाँ संत समागम का केन्द्र बिन्दु रहा है। इस नगरी में ऐसे ही एक संत व्यक्तित्व का प्रादुर्भाव हुआ जिनको इस राज्य की जनता "छत्तीसगढ़ का गाँधी" के रुप में सम्मान देती है। ऐसे महामना व्यक्तित्व हैं संत कवि पवन दीवान जी। जिनके व्यक्तित्व में त्रिगुण –धर्म–साहित्य–राजनीति के रुप में वे विशाल व्यक्तित्व के धनी थे। वे श्री मद्भागवत कथा का छत्तीसगढ़ी में रोचक शैली में पाठ करते थे। अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के मंच ओज–पूर्ण कविताओं के साथ पूरे भारत में छत्तीसगढ़ प्रतिनिधित्व करते थे। हर वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में लाल किले के प्राचीर से कविता पाठ के लिये राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में पूरे देश से हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के वीर रस के कवियों को काव्य पाठ के लिये आमंत्रित किया जाता था। देश में संत कवि पवन दीवान इकलौते थे जिन्हें कई वर्षों तक लाल किले की प्राचीर से काव्य पाठ के लिये आमंत्रित किया गया। इतना ही नही वहाँ प्रत्येक कवि के लिये सीमित समय सीमा थी किन्तु श्रोताओं की मांग पर संत कवि पवन दीवान के लिये कोई समय सीमा नहीं थी।

संत पवन दीवान की रचनाओं में अमीरो के द्वारा गरीबों के शोषण को जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में शोषण के विरुद्ध आक्रोश निम्न पंक्तियों में स्पष्ट दिखता है–यथा–

"कब तलक कठनाईयाँ झेलेगा आदमी
कब तलक तन्हाईयाँ झेलेगा आदमी

.....

कुछ दिनों में खून से खेलेगा आदमी
महलों के गले काट के कुटियों को पिन्हा दो
शोषण की रौशनी को अँधेरे में मिला दो।"

विश्व में शांति अमन की स्थापना करने वालो से उन्होंने भारतीय संस्कृति–अध्यात्म में भारत की महानता को प्रस्तुत करते हुये दीवान जी कहते हैं–

"मेरा भारत एक सागर है, हम कालजयी हैं, वीर पुरुष।
चलता रहता हैं यज्ञ समर, हम राम, युद्ध करके हमसे।।
कितने रावण हो गये अमर, वेदान्त हमारा स्वाभिमान।
शिष्टता हमारी सीता है, हर साँस हमारी गीता है।।"

हमारा देश प्रारंभ से ही शांति का पुजारी रहा है किन्तु कुछ पड़ौसी देश इस खामोशी को कमजोर समझ कर युद्ध करने की गलती करते हैं तब दीवान जी इस पंक्तियों में ललकारते हुये कहते हैं–

"जब शांति–मंत्र गाते हैं तब, हम होते हैं केवल भारत।
जब कुरुक्षेत्र छिड़ जाता है, हो जाते हैं हमी महाभारत।।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में आजादी को किस तरह लोगों ने दुरुपयोग किया उस पर उनकी व्यंग्य की पंक्तियॉ दृष्टव्य है–

"कभी विदेशों ने छीनी थी भारत की आजादी,
आज स्वदेशी छिन रहे हैं जन–जन की आजादी।
रोजी–रोटी नहीं मिली तो पेट बना अपराधी,
हाथों में हथकड़ी लग गई भीड़ बनी आजादी।।"

संत कवि पवन दीवान की कविताओं में विभिन्न आयामों, भावनाओं के रुप मिलते हैं। अपनी कलम में उन्होंने न सिर्फ राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनैतिक परिदृश्यों में ही समाहित नहीं किया अपितु साहित्य को भी अंदर तक जिया है। "महादेवी जी" पर उनकी निम्न पंक्तियॉ बहुत ही मार्मिक हैं–

"तुम शक्ति जागती ज्वाला की, अद्भूत निराला की राखी,
इस युग की मतवाली मीरा, फक्कड़ कबीर की वह साखी।
हिन्दी की वाणी मौन हुई, तुलसी का मानस सिहर गया,
सूखी संगम की सरस्वती, गंगा का स्पन्दन ठहर गया।।

महादेवी वर्मा के अवसान पर दीवान जी एक और मार्मिक पंक्ति देखिये–

Scanned with CamScanner

"जब तुम जागी इस धरती पर, नारी का स्वाभिमान जागा,
जड़ता के घने कुहासे में, आशा का नवविहान जागा।

महादेवी जी के निधन के पश्चात् लगता है संत कवि पवन दीवान जी कलम सिसक उठती है। इन पंक्तियों में दृष्टव्य हैं–

"इस काल चक्र की क्रीड़ा में, भारतमाता फिर छली गई,
शब्दों को प्यासे छोड़ हाय, हिन्दी की बेटी चली गई।।

हमारे देश में "अन्नदाता अर्थात किसान" शुरु से ही शोषण का शिकार रहा है। जो किसान कठिन परिश्रम कर पूरे देश को अन्न खिलाता है वही उपेक्षा का शिकार है। इसी शोषण व उपेक्षा के कारण गरीब किसान समाज में महत्वहीन समझे जाने पर वह दुःखी होता है तब संत कवि पवन दीवान जी कलम कह उठती है–

"मेरे देश के किसान, है पसीना तेरा गान,
तेरी आँखों में सबके सपने.....।
तुम क्या जानो कोई तुम पर महाकाव्य लिखता है,
मुझे खेद है दर्द तुम्हारा बिना मोल बिकता है,
केवल नारी नहीं देश की खुशहाली की रानी
शीर्षक हो तुम और तुम्हारी वह मासूम कहानी.....।।"

संत कवि पवन दीवान जी के काव्य सृजन पर छोटे से लेख में लिखना असंभव है। मैंने उनके ही शब्दों को पिरोने का विनम्र प्रयास किया है। ऐसे महामहाना संत व्यक्तित्व को प्रणाम करती हूँ।

प्रयोगशाला परिचारक,
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय
महाविद्यालय गोबरा नवापारा

■■■

"चारू चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही थी जल–थल में स्वच्छ चाँदनी
बिछी हुई थी, अर्वान और अंबर तल में।"
–मैथली शरण गुप्त–

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की मधुर स्मृतियॉ :

डॉ. श्रीमती विनोद शर्मा,
संयुक्त संचालक,
उच्च शिक्षा संचालनालय

महानदी के तट पर स्थापित श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय गोबरा नवापारा को शासन 24 अगस्त 2019 को शासकीय महाविद्यालय के नाम से प्रारंभ किया। मेरी इस महाविद्यालय में पदस्थापना 16 अगस्त 2012 में हुई थी। मुझे इस महाविद्यालय में 04 वर्ष सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन चार वर्षों में मुझे जनप्रतिनिधियों नागरिकों, पूर्व छात्र–छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का सतत सहयोग प्राप्त हुआ। किसी भी नये महाविद्यालय को विकास की राह पर लाने के लिए अनेक संघर्षों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उस दिशा में मैंने क्रमशः विकास की सीढ़ी पर आगे बढ़कर कार्य करना प्रारंभ किया।

जब मैंने इस महाविद्यालय में कार्य प्रारंभ किया तब यह शिशुवस्था में था। महाविद्यालय में अकादमिक कार्य को प्रारंभ करने के लिए नवनियुक्त पांच प्राध्यापकों एवं कुछ वरिष्ठ प्राध्यापकों ने जोश–उमंग के साथ समर्पित होकर अध्यापन कार्य किया। जिसके कारण अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इस महाविद्यालय की कीर्ति फैली। श्रेष्ठ अकादमिक परिणाम की सुंगधि पूरे क्षेत्र में फैलने लगी। कार्यालयीन कर्मचारियों की अच्छी टीम ने निरंतर मेहनत कर अल्प समय में लोकप्रियता दिलाई।

मेरा प्रारंभ से प्रयास रहा कि छात्र–छात्राओं में अकादमिक गतिविधियों के अलावा साहित्यिक, सांस्कृतिक, प्रश्नमंत्र, आदि गतिविधियां संपन्न कराकर उनकी छिपी हुई प्रतिभाओं को महाविद्यालय मंच में स्थान दिया जाये। निरंतर व्याख्यानमाला, रूसा वर्कशाप, विशेषज्ञों को आमंत्रित कर महाविद्यालय के विकास को नई दिशा देने का प्रयास किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से छात्र–छात्राओं को ग्रामीण संस्कृति से जोड़ने का सफल प्रयास किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के निरंतर सात दिवसीय शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में सफल संचालित हुए। क्रीड़ा गतिविधियों के माध्यम से छात्र–छात्राओं के निरंतर सेक्टर एवं विश्वविद्यालयीन स्तर में प्रतिनिधित्व कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। किसी भी महाविद्यालय का सशक्त आधार उस महाविद्यालय का ग्रंथालय होता है। उस दृष्टि से मेरे कार्यकाल में छात्र–छात्राओं के लिए अकादमिक पुस्तकों के अलावा प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें, ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें, कविता, कहानी, अनेक उपन्यासों को ग्रंथालय में मंगाकर समृद्ध किया।

मुझें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि महाविद्यालय के स्थापना के एक दशक अवसर पर महाविद्यालयीन पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस हेतु मैं अपनी मंगल कामनाएं अभिव्यक्त करती हूँ।

■■■

"तू पूछ अवध से राम कहाँ? वृन्दा बोलो धनश्याम कहाँ?
ओ मगध!कहाँ मेरे अशोक, वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ"
–रामधारी सिंह दिनकर–

Scanned with CamScanner

मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आयेंगे,
मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आयेंगे।

–दुष्यंत कुमार–

डॉ. आलोक शुक्ला

दुष्यंत कुमार –हिन्दी में उन रचनाकारों में जाने जाते हैं जिन्होंने अनेक विधाओं में सृजन किया है। सामान्यतः उनके पाठक उन्हें सशक्त व्यंग्य गजलकार एवं कवि के रूप में जानते हैं। वास्तविकता यह है कि दुष्यंत जी ने आलोचना, उपन्यास, काव्य–नाटक एवं बाल साहित्य भी लिखा हैं। उन्होंने मात्र 12 वर्ष की उम्र में "किसी एक वन में रहता था चतुर शिकारी एक" कविता लिखी। यह बात अलग है कि गजल विधा लिखने में उन्हें जितनी सफलता मिली वह दूसरी अन्य विधा में नहीं। गजल विधा में भी दुष्यंत जी ने अन्याय के विरूद्ध ही आवाज उठाई। उनकी नई कविताओं में भी अन्याय का प्रतिरोध करने वाली भावनाएं प्रस्फुटित होती है। दुष्यंत कुमार जी गजलों को समसामयिक इतिहास की एक प्रतिकिया रूपी दस्तावेज कहा जा सकता है। एक स्थान पर दुष्यंतजी इन्हीं भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं –

"वो घर में मेज पर कुहनी टिकाये बैठी है,
थकी हुई हैं वही उम्र आजकल लोगों।"

दुष्यंत जी कुछ उपन्यास लिखे हैं जिसमें **"छोटे छोटे सवाल, आंगन एक वृक्ष,** और **"दुहरी जिंदगी"** आदि। इसके अतिरिक्त उनकी "आवाजों के घेरे में" (काव्य संग्रह) **"एक कंठ विषपायी"** (काव्य नाटक) आदि है। दुष्यंत कुमार की सर्वाधिक चर्चित काव्य संग्रह **"साये में धूप"** हुई जो उनकी अंतिम काव्य संग्रह थी। उनकी गजलें आम पाठकों में लोकप्रिय थी। इसका उदाहरण दृष्टव्य है –

"कैसे मंजर सामने आने लगे हैं,
गाते–गाते लोग चिल्लाने जगे हैं।"

उनकी कविता में यथार्थ का चित्रण है यथा –

"जीने से ज्यादा
तकलीफ देह क्या होगी मृत्यु ?"

दुष्यंत कुमार की प्रथम काव्य रचना "सूर्य का स्वागत है" जिसमें विश्वास एवं सच्चाई विद्यमानहै, इसमें कवि की बैचेनी स्पष्टतः दिखाई देती है। यह बैचेनी सामाजिक व व्यक्ति दोनों रूपों में प्रस्तुत है। इस रचना में कवि संघर्षशील है जो जीवन के निराशाओं को अभिव्यक्त करता है। वह सूर्य के स्वागत के माध्यम से युग के नैराश्य, अंधकार, कुंठा एवं पराजय की भावना को समाप्त करना चाहता है। यथा –

"मैं अंधेरे का आदी
अकर्मण्य निराशा
तुम्हारे आने का खो चुका था विश्वास
पर तुम आये हो, स्वागत।"
"रस के घने काले समय में
मेरी हथेली पर
तुमने बनाया है जो सूरज
मेहन्दी से
कहीं सुबह तक रचेगा लाल
लाल होगा।"

"जलते हुए वन का बसंत" काव्य संग्रह वैचारिक है जिसमें सामान्य जन की पीड़ा को प्रस्तुत किया है। इसमें दुष्यंत जी ने गंभीर, गहन मानसिकता को सहजता के साथ अभिव्यक्त किया है। सन् 1963 में **"आवाजों के घेरे"** प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने अपनी भावनाओं से समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। मनुष्य को वर्तमान दुःख संत्रास से मुक्त कराना चाहता है। इस काव्य संग्रह में नई और पुरानी दोनों रूपों को मूल्यांकित कर समन्वित चेतना का विकास प्रस्तुत किया है। इस कृति में आस्थावादी दर्शन, उनकी उपलब्धि से उनकी आस्था अनिश्चय, संघष और आशंकाओं को पार करके आगे जाने वाली आस्था है। कवि गौतम बुद्ध से लड़कर उनके दुःखवादी दर्शन को चिरतंन शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। इसे शाश्वत दर्शन माना है किन्तु उसमें निदान का अभाव बताया है। यथा –

"प्रश्न नहीं उस दुःख का, वह दुःख
जिस पर तुमने मनन किया भी
वह निर्वाण अधूरा है, वह
जिसका तुमने सृजन किया था ....."

Scanned with CamScanner

"एक कंठ विषपायी" दुष्यंत जी का काव्य नाटक है जो प्रतीकात्मक है। इसमें पौराणिक कथा को काव्य का विषय बनाया है। इस काव्य नाटिका में जर्जर रूढ़ियों एवं परम्पराओं के शव से चिपटे हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक परिवेश में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि और नये मूल्यों को संकेत करने वाला समर्थ काव्य नाटक है। पौराणिक पात्रों के माध्यम से दुष्यंत जी ने हमारे प्रजातंत्र के विभिन्न वर्गो पर व्यंग्य किया है। कहीं कहीं इन्हीं पात्रों के द्वारा सत्ता–संघर्ष की गाथा को अभिव्यक्त किया है – यथा–

"हर परम्परा के मरने का विष मुझे मिला
पर सूत्रपात का श्रेय ले गये और लोग।"

"साये में धूप" दुष्यंतजी की गजलों को संग्रह है जो काल की दृष्टि से उनकी अंतिम रचना कृति है। दुष्यंत जी के इस गजलों में सर्वाधिक द्वन्द्व और विद्रोह का पुट मिलता है। अन्याय के प्रति कलम की आवाज उन्होंने उठाई। मध्यप्रदेश शासन के अधिकारी होते हुए भी उन्होंने गोलीकांड के विरोध में कविता लिखी। इन्होंने सातवें दशक की राजनीतिक स्थिति पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि यथा –

"गूंगे निकल पड़े हैं, जुबां की तलाश में,
सरकार के खिलाफ ये साजिश तो देखिए।
जिसने नजर उठाई वही शख्स गुम हुआ
इस जिस्म के तिलिस्म की बंदिश तो देखिए।"

उस दौर के बुद्धिजीवियों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दुष्यंत कुमार ने कहा –

"मैं बहुत कुछ सोचता रहता हूं पर कहता नहीं
बोलना भी है मना, सच बोलना तो दर किनार।"

डॉ. धर्मवीर भारती ने उनके गजलों व काव्य सृजन के संबंध में कहा – दुष्यंत कुमार में इंसान के बुनियाद मूल्यों और सपनों के प्रति एक दर्द भरी आस्था है। उसने आदमी से, मानव मात्र से अपनी एकात्मकता स्थापित की थी इसलिए व कह सकता था....

"मुझमें रहते हैं करोड़ो लोग,
चुप कैसे रहूं?"

दुष्यंत कुमार की गजलें हिन्दी और उर्दू की सामंजस्य पर आधारित काव्य और अनुभवों का अपरूप उदाहरण है। उर्दू को नागरी लिपि में लिखकर शब्दो का विविध संदर्भों में प्रस्तुतिकरण कर दुष्यंत जी ने जीवन की सच्चाई को एक नई सच्चाई अर्थात उर्दू हिन्दी की एकता के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने अधिकांश गजलों को आम आदमी को समर्पित किया है। हमारा समाज इतनी विषमताओं और पीड़ाओं से जुड़ा हुआ कि उसकी पीड़ा का सही अहसास भी नहीं किया जा सकता। दुष्यंत कुमार ने एक स्थान पर कहा है– "मैं कविता को चौंकाने या आतंकित करने के लिए इस्तेमाल नहीं करता, उसे इतनी छोटी–सी भूमिका नहीं दी जा सकती। समाज और व्यक्ति के संदर्भ में उसका दायित्व इसमें बहुत बड़ा है। दुष्यंत कुमार ने स्पष्ट कहा है –

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।"
हो गई है वीर पर्वत सी निकलनी चाहिए
इस हिमालय से अब ऐसी गंगा निकलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।

■■■

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं, जिससे उथल–पुथल मच जाये।
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर से आये।।"
–बालकृष्ण शर्मा नवीन–

Scanned with CamScanner

"खाद्य अपमिश्रण के सामान्य परीक्षण"

–डॉ. मधुरानी शुक्ला

खाद्य पदार्थों में मिलावट आज एक ज्वलंत समस्या है। आज हर व्यक्ति दिनरात मेहनत करता है और अपनी कमाई का लगभग 50 प्रतिशत भाग खाने पीने के सामान पर खर्च करता है। क्योंकि ये उसकी रोज की आवश्यकता है। अपनी कड़ी मेहनत की कमाई से भला कौन मिलावटी सामान, खाना पसंद करता है। अपमिश्रित खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता काफी कम हो जाती है क्योंकि इससे सस्ते और हानिकारक पदार्थ जैसे रंग, रसायन, आदि मिला दिये जाते है। मिलावट होने पर उत्पाद की मात्रा में वृद्धि आ जाती है और वह आकर्षक भी दिखने लगता है परन्तु ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते है।

सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों जैसे चायपत्ती, मसाले, मेवे, शहद, दालें, आटा, दूध इत्यादि में इस तरह मिलावट की जाती है कि सामान्य खाद्य पदार्थ और मिलावटी खाद्य पदार्थ में भेद कर पाना काफी जटिल हो जाता है। खाद्य पदार्थों को उपयोग करने से पहले यदि मिलावट की जांच कर ली जाए तो उपभोक्ता काफी हद तक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बच सकता है।

मिलावट का स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्रायः भोज्य पदार्थों में मिलावट लाभ कमाने के लिए किया जाता है। उपभोक्ताओं को इसकी जानकारी होनी चाहिए, उन्हें मिलावट की जांच करने की विधि का ज्ञान होना चाहिए। खाद्य अपमिश्रण से लकवा, ट्यूमर, तथा अंधापन जैसी खतरनाक बिमारियां हो सकती है। मिलावट की मात्रा और पदार्थ के आधार पर प्रतिकूल प्रभाव भी भिन्न भिन्न होते है।

भोज्य पदार्थ में मिलावटी पदार्थ

भोज्य पदार्थों में पाये जाने वाले मिलावटी पदार्थ क्या क्या होते हैं और उनका हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है इसकी जानकारी हर उपभोक्ता को होना जरूरी है :–

खाद्यान्न	मिलावट	होने वाले प्रभाव
दूध	पानी, यूरिया,रंग, वाशिंग पाउडर	स्वास्थ्य संबंधी बिमारी
नमक	मिट्टी, रेत	गले संबंधी बिमारी
चांदी वर्क	एल्यूमिनियम	पेट संबंधी बिमारी
दालें	एस्बेस्टॉस पावडर	पाचन तंत्र, गुर्दे में पथरी
लाल मिर्च	रोडामाइन–बी	यकृत, गुर्दे में समस्या
दालें–गुड़	ककड़, रेत, लकड़ी का बुरादा	दांत व आंत में समस्या
चायपत्ती	लौहचूर्ण रंग	आहार तंत्र में समस्या
सरसों का तेल	आर्जिमोन तेल	अनियंत्रित ज्वर

मिलावट की जांच के सरल उपाय :–

खाद्य पदार्थों में मिलावट की जांच करना बहुत ही आसान है। कोई भी उपभोक्ता आसानी से जांच करके पदार्थों की शुद्धता की जांच कर सकता है। जांच के आसान परीक्षण निम्न है –

दूध – लैक्टोमीटर की सहायता से दूध का सापेक्षिक घनत्व ज्ञात करके उसके शुद्धता की जांच की जा सकती है। शुद्ध दूध का सापेक्षिक घनत्व 1.030 से 1.034 तक होना चाहिए।

नमक – नमक की कुछ मात्रा को कांच के गिलास में पानी से घोलकर कुछ समय स्थिर रख देना चाहिए मिलावट होने पर तल पर , रेत, मिट्टी जम जाता है।

चांदी के वर्क – चांदी के वर्क में एल्युमिनियम की मिलावट की जांच करने के लिए उसे जलाकर देखते हैं मिलावट होने पर गहरे ग्रे रंग का अवशेष बच जाता है।

लाल मिर्च – लाल मिर्च पावडर को पानी भरे गिलास में डालते हैं यदि पानी रंगीन हो जाए तो वह मिलावट को दर्शाता है।

सरसों का तेल – मिलावट की जांच के लिए सरसों के तेल में सांद्र नाइट्रिक अम्ल डालकर हिलाते है। थोड़ी देर बाद एसिड की परत में अगर लाल भूरा परत दिखाई दे तो यह आर्जीमोन तेल के मिलावट को दर्शाता है।

मावा – मावा में स्टार्च के मिलावट की जांच करने के लिए उसे पानी में उबालकर आयोडिन की कुछ बूंदे डालने पर नीला रंग प्राप्त होता है।

Scanned with CamScanner

काली मिर्च – काली मिर्च में पपीते के बीज मिला दिए जाते हैं। पानी में डालकर देखने पर यदि मिलावट होगी तो बीज पानी में तैर जायेंगे। असली काली मिर्च पानी में डूब जायेगी।

खाद्य अपमिश्रण एक गंभीर अपराध है :–

प्रत्येक उपभोक्ता को मिलावटी पदार्थों के उपयोग से बचना चाहिए। खुली खाद्य सामग्री न लें हमेशा मानक प्रमाण चिन्ह अंकित सामग्री ही खरीदें।

खाद्य अपमिश्रण अधिनियम 1954 में घोषित किया गया है इस अधिनियम के अंतर्गत विक्रेता को अपराधी पाये जाने पर कम से कम 6 माह के जेल का प्रावधान है। मिलावट की समस्या मानव स्वास्थ्य से जुड़ी है अतः सभी लोगों को इसके प्रति जागरूक होना चाहिए।

विभागाध्यक्ष
रसायनशास्त्र
श्री कुलेश्वर महादेव शासकीय महाविद्यालय
गोबरा नवापारा

■■■

गुरू की महानता

कु. राधा साहू
पूर्व छात्रा

यह वन वन नहीं जिस वन में जंगली जानवर नहीं,
वह देश नहीं जिस देश में गुरू नहीं
जो करे गुरू की सेवा
सो पावे शिक्षा की मेवा
गुरू है शिक्षा का मूल
जो न समझे उसकी भूल।
सोना चांदी का तो मोल
गुरू का ज्ञान है अनमोल।

गगन में है असंख्य तारे
गुरू की वाणी है न्यारे
अम्बर पर सितारे है
तो धरती पर गुरू हमारे
जो करे गुरू का अपमान
उसका न हो जग में सम्मान
गुरू बिना है जग अप्राण।
गुरू के चरण को शत् शत् प्रणाम।

कविता का जन्म

कु. ममता पटेल
पूर्व छात्रा

गीत की कलाई में,
दर्द की घड़ी होगी
मौत से कई वर्षों
जिंदगी लड़ी होगी।
सूनी–सूनी आँखों से
आँसू जब मचल करके
पंक्ति अधरों पर
चुम्बनी जड़ी होगी।
बर्फ जब पिघलताहै
सरिता का जन्म होता है
पाप–घट छलकता है
तब सीता का जन्म होता है
रोते–रोते आंखों के आँसू
जुबां पर आ जाते है
उस समय दग्ध उर से
कविता का जन्म होता है।

Scanned with CamScanner

प्रबंध : प्रकृति तथा मानव

– श्री एस.आर. वड्डे

प्रबंध का सामान्य अर्थ व्यवस्था से है। अतः उपर्युक्त आधार पर प्रबंध की उत्पत्ति प्रकृति की उत्पत्ति की उत्पत्ति के साथ माना जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में प्रबंध का मूल प्रकृति में निहित है। प्रकृति के अनुरूप समस्त प्राणियों के जीवन का प्रबंधन होता है। अपने जीवन का संचालन प्रकृति की उपेक्षा करते हुए नहीं की जा सकती। मनुष्य जीवन में भी प्रकृति का महत्वपूर्ण योग होता है। मानव जीवन प्रकृति से प्रभावित है तो प्रकृति मानव जीवन से।

प्रकृति का प्रबंधन कुछ इस प्रकार है – सूर्योदय तथा सूर्यास्त अपने पूर्व निर्धारित व निश्चित समय पर ही होता है। समस्त प्राणी भी इसका अनुकरण करते हुए इसी अनुरूप अपना कार्य संपन्न करते है। इसी प्रकार यह अपने चार प्रमुख ऋतुओं ग्रीष्म, वर्षा, शरद व बसंत में क्रमशः परिवर्तन करती है। इसके अनुरूप ही मनुष्य अपने जीवन को गतिमान बनाते है। प्रकृति के समस्त प्राणियों के मध्य एक ऐसा जाल है, जिसमें हर प्राणी किसी अन्य का प्रभावी है और इन सबके मध्य एक गहरा संबंध व उचित समन्वय है। जो कि प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण भाग है। प्रकृति अपनी व्यवस्थानुरूप बाढ़ सूखा आदि स्थितियां निर्मित करती है जो अर्थशास्त्र के प्रख्यात विद्वान माल्यस के जनसंख्या सिद्धांत का प्रमाण है। यदि मनुष्य अपनी ओर से जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण नहीं करता हैं तो प्रकृति द्वारा नियंत्रण अकाल, बाढ़, भुकम्प आदि द्वारा स्वाभाविक है। वर्तमान समय में माल्थस का सिद्धांत लागू होता है।

प्रबंध की व्याख्या करते है तो पाते है कि इसके कार्य व्यक्ति के जीवन से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। हर व्यक्ति जो अपने जीवन में चेतन, जागृत व सजग रहता है उसे उद्देश्य तय करना होता है। उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए योजना बनानी पड़ती है। निर्देशन व मार्गदर्शन की भी जरूरत होती है। उद्देश्यानुरूप स्वयं को प्रेरित करना होता है। योजनानुरूप कार्य न हो व उद्देश्य की प्राप्ति न हो तो जांच की जाती हैं कि कहां चूक हुई और उस पर सुधारात्मक कार्यवाही करते हुए नियंत्रण की जाती है। एक कार्य की समाप्ति पर दूसरे कार्य हेतु प्रबंधन अनवरत गतिमान होता हैं और यह जीवन पर्यन्त चलता ही रहता है।

स्वामी विवेकानंद जी का एक कथन है – "मनुष्य जितना नीचे गिरता है गिरने दो पर एक समय सीमा के बाद जब उसे चेतना आएगी तो वह नए सिरे से उठेगा और उठता ही जाएगा। " जब मनुष्य जागृत होता है तो वह शेष समय का प्रबंधन व शक्ति का उपयोग बेहतर तरीके से करने की कोशिश करता है। उसका परिणाम भी उतना ही अच्छा होता जाता है।

वर्तमान में प्रबंध शब्द सर्वाधिक व मुख्य रूप से व्यावसायिक क्षेत्र में प्रयुक्त होता है परंतु वास्तव में इसका प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पाते है। जहां भी सफलता अर्जित होती है वहां प्रबंधन का महत्वपूर्ण भाग होता है। बिना प्रबंध के एक अर्थपूर्ण जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

विभागाध्यक्ष
वाणिज्य विभाग

■■■

"सोहत स्याम जल्द मृदु घोरत धातु रंगमंगे सृंगात।
मनहुँ आदि अंमोज विराजत सेवति सुर–मुनि–भृंगनि"
–गोस्वामी तुलसीदास–

Scanned with CamScanner

स्वामी विवेकानंद एवं युवा

—श्री ए.के. गुप्ता

पवित्र भारतभूमि महापुरूषों की जन्मभूमि है। अनेक महापुरूषों ने इस धरती पर समय–समय पर जन्म लिया है तथा अपने विचारों से भारतीय मूल्यों यथा संस्कृति, संस्कार, अध्यात्म को पुष्ट किया है। भारत का इतिहास रहा है जब जब मूल भारतीय विचार रसातल की ओर अग्रसर हुआ कोई न कोई महापुरूष अपने विचार कांति से भारतीय विचार मूल्यों को पुनः प्रतिस्थापित किया है।

1857 स्वतंत्रता आंदोलन के विफलता के पश्चात भारत में निराशा का वातावरण व्याप्त था। भारतीय जनमानष विशेषकर युवाओं में भारतीय मूल्यों के वैराश्य तथा हीनता का भाव घर कर गया था। अधिकांश युवा यह मान चुके थे कि भारत के उत्थान का रास्ता पश्चिमी भौतिकवाद के रास्ते से होकर जाएगा। ऐसे में एक दिव्य युवा का प्रादुर्भाव होता है जिनके विचारों ने भारतीय जनमानष विशेषकर युवाओं को उत्थान का रास्ता दिखाया। वे युवा और कोई नहीं युग पुरूष स्वामी विवेकानंद जी है। यद्यपि स्वामीजी ने भारतीय संस्कृति, संस्कार, आध्यात्म, शिक्षा, विकास जैसे अनेक विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त किए है। परंतु ऐसे विचार जो युवाओं से संबंधित है, उनका मार्गदर्शन करते है इस लेख में प्रस्तुत है।

"उठो जागों और लक्ष्य प्राप्ति तक न रूकों" :–

स्वामी जी ने युवाओं से कहा कि तुम सामर्थ्यवान हो, उर्जावान हो, तुममें क्षमता है पूरे विश्व में अपना व राष्ट्र का विजय पताका फहराने का परंतु आवश्यकता है दृढ़ इच्छाशक्ति की। अपने सामर्थ्य को पहचानने की और एक लक्ष्य निर्धारण की। जिस प्रकार एक बड़ा जहाज कितना भी शक्तिशाली हो, सामर्थ्यवान हो, लक्ष्य बिना सागर में भटकतें रहता है अपनी उर्जा को व्यर्थ करते रहता है। उसी प्रकार युवा कितना भी शक्ति व सामर्थ्य से भरा हो एक सार्थक लक्ष्य के अभाव में अपने जीवन को व्यर्थ करता है। अतः युवा एक स्पष्ट एवं सार्थक लक्ष्य तय कर पूरी दृढ़ इच्छाशक्ति से ओर कदम बढ़ाए तो सफलता निश्चित है।

"आदर्श के लिए जियो":–

लक्ष्य निर्धारण के पश्चात उपर्युक्त मार्ग का निर्धारण भी आवश्यक है। इसलिए सबकी चिंता छोड़कर एक उच्च आदर्श बनाओं और उस आदर्श के लिए अपनी पूरी जिंदगी लगा दो। कोई एक बात सभी के लिए सत्य या उचित नहीं हो सकती, इसलिए कुछ लोग विरोध भी कर सकते है। समग्र विचार कर मनन कर युवा एक उच्च आदर्श का निर्माण कर उस पर चलने के लिए तैयार हो। कठिनाईयां आएंगी, बुराईयां भी आएंगी परंतु युवा अपना कदम पीछे नहीं खींचे। स्वामी जी ने कहा है कि "बुराई के रास्ते पर तेजी से बढ़ने की अपेक्षा अच्छाई के रास्ते पर एक ही स्थान पर खड़े रहना बेहतर है।" सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने के लिए उच्च आदर्श ही प्रेरक बने थे। आज समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महिलाओं के साथ दुष्कर्म आदि के लिए एक आदर्श का अभाव ही जिम्मेदार है। अतः युवा ईमानदारी, कर्मशीलता, सादगी जैसे आदर्शों को अपनाकर ही उक्त समस्याओं को जड़ से मिटा सकते है।

"कार्य में जुट जाओं साधन अपने आप मिलेंगे" :–

स्वामी जी इस बात पर विश्वास करते थे कि लक्ष्य महान हो तो लक्ष्य प्राप्ति के साधन स्वतः संयोजित हो जाते हैं। शिकागों धर्म सम्मेलन में भाग लेने के निश्चय के पश्चात् स्वामी जी के पास अमेरिका जाने के लिए पैसे की कोई व्यवस्था नहीं थी। लक्ष्य महान था इसलिए संयोग ऐसे बना कि सारे साधन अपने आप मिलते गए। यहॉ तक कि परदेश में भी जहॉ कोई परिचित नहीं था वहॉ भी सहायता के लिए अपरिचित महिला आगे आयी तथा अपने घर में रहने के लिए स्थान दिया। इसलिए युवाओं को भी साधन की चिंता छोड़कर लक्ष्य को पूरा करने पर अपना पूरा ध्यान लगाना चाहिए। सारे साधन कहीं न कहीं से एकत्र हो जाएंगे। वर्तमान में युवा भी इसी उधेड़बुन में रहते कि क्या होगा? कैसे होगा? कौन करेगा? इसी विचार में लक्ष्य पीछे छुट जाता है।

"जिम्मेदारी लो" :–

स्वामीजी युवाओं का आव्हान करते है कि जिम्मेदारी लेने के लिए स्वयं आगे बढ़ो। जो जिम्मेदारी लेता है वह निखरता है, अपने श्रेष्ठतम रूप में सामने आता है। अतः स्वयं की समाज

Scanned with CamScanner

की, राष्ट्र की जिम्मेदारी लेने के लिए सहर्ष तैयार रहों। भारत माता अपेक्षा करती है कि उसके बच्चे आगे जाकर नेतृत्व संभालेंगे और पुनः अपनी मां को वैभवशाली और गौरवशाली बनाएंगे। वर्तमानमें देश में व्याप्त अनेक समस्याओं के लिए युवा राजनेताओं, नौकरशाहों, समाज के पदाधिकारियों यहॉ तक कि माता–पिता को दोषी मानते हैं, परंतु इसके समाधान के लिए आगे बढ़कर प्रयास करना नहीं चाहते। यदि युवा जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सार्थक प्रयास करे तो निश्चित ही सारी समस्याओं का समाधान होगा।

"नर ही नारायण" :–

स्वामीजी ने कहा है कि मैं "उस नारायण का सेवक हूं जिसे अज्ञानी लोग नर कहत है। " हमारी समस्त क्रियाकलापों का अंतिम उद्देश्य लोगों की सेवा करना होना चाहिए क्योंकि स्वाामीजी का मानना था कि मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है। प्रत्येक मनुष्य में स्वयं ईश्वर वास करते हैं। अतः हम जो भी कार्य करते है। उसका मूल लक्ष्य दरिद्रों की, निर्बलों की सहायता व सेवा होनी चाहिए।

"पूर्व व पश्चिम का उचित समायोजन" :–

स्वामीजी के अनुसार भारतीय वेद, ग्रंथ ज्ञान के अथाह भंडार है। इसके अनुसार मनुष्य एक आदर्श जीवन जी सकता है। भारतीय ग्रंथ व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है। वहीं पश्चिमी सभ्यता भौतिक संसाधनों की उन्नति पर जोर देती है। हमें इस फेर में नही पड़ना चाहिए कि कौन सी सभ्यता श्रेष्ठ है। बल्कि दोनों का उचित समायोजन हो जायें तो मनुष्य अपने उच्चतम उन्नति को प्राप्त कर सकता है। हमें संस्कृत और अंग्रेजी दोनों भाषाएं सीखनी चाहिए। संस्कृत इसलिए ताकि हम पुरानी ज्ञान से परिचित हो सके और अंग्रेजी इसलिए विदेशी ज्ञान भंडार से कुछ अर्जित कर सकें। युवा पूर्व व पश्चिम सभ्यताओं का उचित समायोजन करें।

स्वामीजी के विचार अनंत व सार्वकालिक है। उनके विचार युवाओं के लिए आज भी प्रेरणादायक है। उन्होंने कहा था यदि 100 चरित्रवान युवा मिल जाए तो देश की तस्वीर बदल जाएगी। आज की आवश्यकता है कि युवा स्वामी जी के विचारों को पढ़े व आत्मसात करें। इससे युवा स्वयं को विकास के चरम पर पाएंगे साथ ही राष्ट्र की उन्नति में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान कर पाएंगे।

वाणिज्य विभाग

■■■

कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है

–श्री राजू रजक,
पूर्व छात्र

कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है
ज्ञान विज्ञान और कला का केन्द्र हमारा है,
बहती ज्ञान की गंगा यहां,
सबको मिलता सम्मान यहां,
विद्या ही भगवान यहां,
शिक्षा अर्जन ही सबका नारा है,
कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है।
हीरे मोती पैदा करता
महाविद्यालय अपनी धूल से
सहगुणों का प्रकाश छिपा है, इसके मूल में
उज्जवल भविष्य बनाना है, यही हमारा नारा है
कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है।
अच्छे दिन के सच्चे गुरूजन यहां,
सबको देते ज्ञान,
एकता मानवता और प्रेम के,
भाई चारे की अनुपम धारा है,
कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है।
अनुशासन का ज्ञान यहां,
सबको देते मान यहां
गुरूदान का सम्मान यहां,
सामंजस्य का अनुठा नजारा है,
कुलेश्वर महाविद्यालय हमारा है।
छात्र यहां के कोमल अंकूर से पौधे बन जाते है,
गुरूजन सब माली बनकर यह उपवन सजाते है,
मन मोहक खुशबू मिलती है,
उपवन के फूलो से।

Scanned with CamScanner

निजता का अधिकार

–प्रकाश चंद जांगड़े

निजता का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार और निजी स्वतंत्रता के अधिकार का मूलभूत हिस्सा है। यह संविधान के भाग तीन में प्रदत्त संवैधानिक अधिकार है। भारत के संविधान में भाग तीन में अनुच्छेद 12 से 35 तक में इसका वर्णन किया गया है। अनुच्छेद 21 के अनुसार किसी भी व्यक्ति को "विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त" उसके जीवन और शरीर की स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में यह फैसला खड़ग सिंह मामले में शीर्ष अदालत की 6 सदस्यीय पीठ ने 1962 में व्यवस्था दी थी कि निजता का अधिकार मौलिक अधिकारों की श्रेणी में नहीं आता है। अब 5 सदस्यीय संविधान पीठ "अधार मामले" की सुनवाई निजता के मौलिक अधिकार के पहलू से करेगी।

इतिहास के बनते हुए देखना अपने आप में एक सौभाग्य है और फिर इतिहास रोज बनते भी तो नहीं किंतु निजता के मामले में उच्चतम न्यायालय की 9 जजों की संविधान पीठ का निर्णय आजाद भारत में एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है, जो आने वाले दशकों में लोकतंत्र को मजबूती देने का कार्य करती रहेगी। न्यायालय ने कहा कि "निजता का अधिकार" एक मौलिक अधिकार है जिसे अनुच्छेद 21 के अंतर्गत संरक्षण प्राप्त है। इस मामले की सुनवाई के दौरान अर्टानी जनरल के.के. वेणुगोपाल ने कहा था कि निजता एक एलीट अवधारणा है। यानि प्राईवेसी खाते–पीते घरों की बात है, और निजता का विचार बहुसंख्यक समाज की जरूरतों से मेल नहीं खाता, लेकिन संविधान के पहरेदार उच्चतम न्यायालय का कहना है कि यह "जरूरतमंद लोगों को बस आर्थिक तरक्की चाहिए, नागरिक एवं राजनैतिक अधिकार नहीं, उचित नहीं है।"

देश की सबसे बड़ी अदालत के इस निर्णय के निहितार्थ को समझनें का प्रयास करें, तो अपने यह निर्णय नहीं, बल्कि एक सुंदर कविता प्रतीत होगी, जो बार–बार पढ़ी जानी चाहिए। सच कहें तो हम इस निर्णय के ऐतिहासिक महत्व की पहचान तब तक नहीं कर पाएंगे, जब तक हम निजता के महत्व से ही अनजान हो।

सहायक प्राध्यापक
राजनीति शास्त्र

■■■

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जॉऊ
चाह नही, प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नही, देवी के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बन–माली! उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पर जावें वीर अनेक"

–पं. माखनलाल चतुर्वेदी–

Scanned with CamScanner

Biological clocks

- Dr. Razia Sultana -

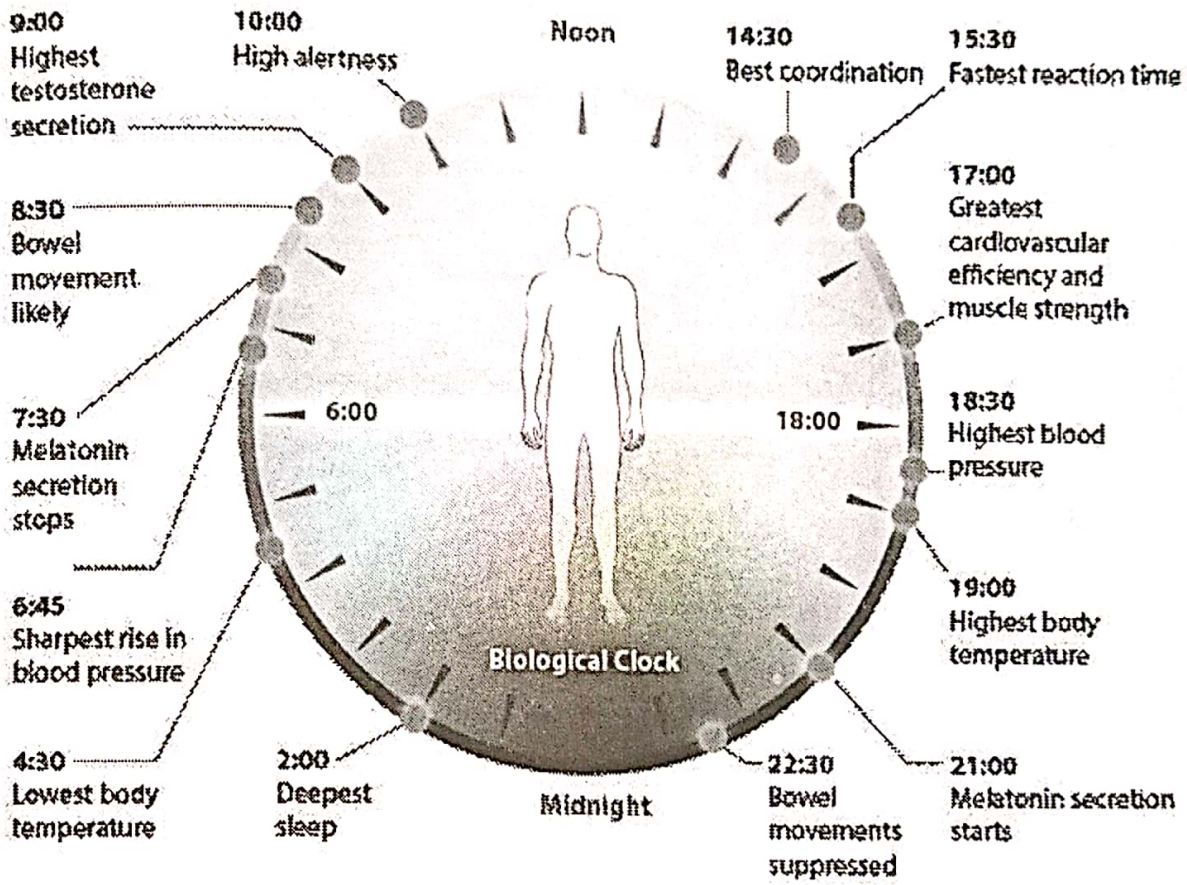

Nothing is constant in this living system. All physiological, molecular and biochemical events are periodic in nature and shows temporal rhythms with various periodicity. These periodicities give enough space to each and every physiological activity. These rhythmic events are present in almost all organisms from prokaryotes to eukaryotes; from unicellular to multicellular; and from plants to animals, and are known as biological rhythms. The physiological event that generates these rhythms and synchronizes it with the external environment is called biological clock. The science that deals with the study of these biological clocks and there underlying mechanism is called Chronobiology. Inside our brain a bunch of neurons called suprachaismatic nuclei (SCN) is supposed to be master biological clock. SCN is a very complicated time piece and yet many loops behind its mechanism are unfolded.

What could be the possible advantage of biological clock?

Biological clock is a fundamental adaptation that helps organisms to anticipate the daily light-dark cycle on the planet. In plants, biological rhythm is observed in leaf movement. It was found that those plants whose leaves deploy during the day and folds at night are more efficient in using sunlight for photosynthesis.

Scanned with CamScanner

Ecologically biological rhythm plays great role in prey and predator relationship. For example, small rodents, such as mice and voles, have a clock function that triggers; those to eat while helping them avoid becoming a snack for predators flying above. It's called synchronous feeding. The synchronous feeding behavior confuses the predator, so that, when the hawks looks down and see hundreds of mice and voles running around it gets confused as to what to go after. That's another example of how the clock is working to enhance the survivorship of those voles and mice.

Thus biological clock is a key mechanism behind survivorship and evolutionary adaptation.

Department of Zoology

■■■

"Life"

Ankit Verma, Ex. Student

1.	Life is a Challenge	-	Meat it
2.	Life is a gift	-	Accept it
3.	Life is an Adventure	-	Dare it
4.	Life is Sorrow	-	Over come it
5.	Life is duty	-	Perform it
6.	Life is a game	-	Play it
7.	Life is a mystery	-	un old it
8.	Life is a song	-	sing it
9.	Life is opportunity	-	Take it
10.	Life is journey	-	Complete it
11.	Life is a Love	-	Enjoy it
12.	Life is a Beauty	-	Praise it
13.	Life is a Sprit	-	Realise it
14.	Life is a struggle	-	Solve it
15.	Life is a goat	-	Achieve it

Where the mind is without fear
And the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been
broken up into fragments by narrow
domestic wall
Into that heaven of freedom my lord
let my country awake!

By- Ravindra Nath Tagore, Geetanjali

Scanned with CamScanner

impact of various toxicants

- Dr. (Mrs.) Madhurani Shukla

The man for his survival has developed materialistic things and has harnessed natural resources for making life easy, which ultimately has contributed towards polluting environment. Consequently, all living beings and nature are now affected by environmental pollution. The air we breathe, the food and water we consume are all polluted which has led man to worry about the environmental pollution since the consequences are faced every day in the form of major health problem. Our country is now a fast-growing developing country. Developments occur not only in the field of economic, infrastructure, science etc. but also in terms of living standard. So increased use of luxurious items creates an adverse effect on living organisms. The compound, which shows harmful effects to human, plants and animals when their concentration increases from a certain limit in the environment, called as toxicants because they can deteriorate the resistant power and functioning of living beings. The toxicants are classified into two main classes i.e. Inorganic toxicants and Organic toxicants. Inorganic toxicants consist of metals, non-metals and metalloids whereas organic toxicants are aliphatic and aromatic compounds, various pesticides and organometallic compounds.

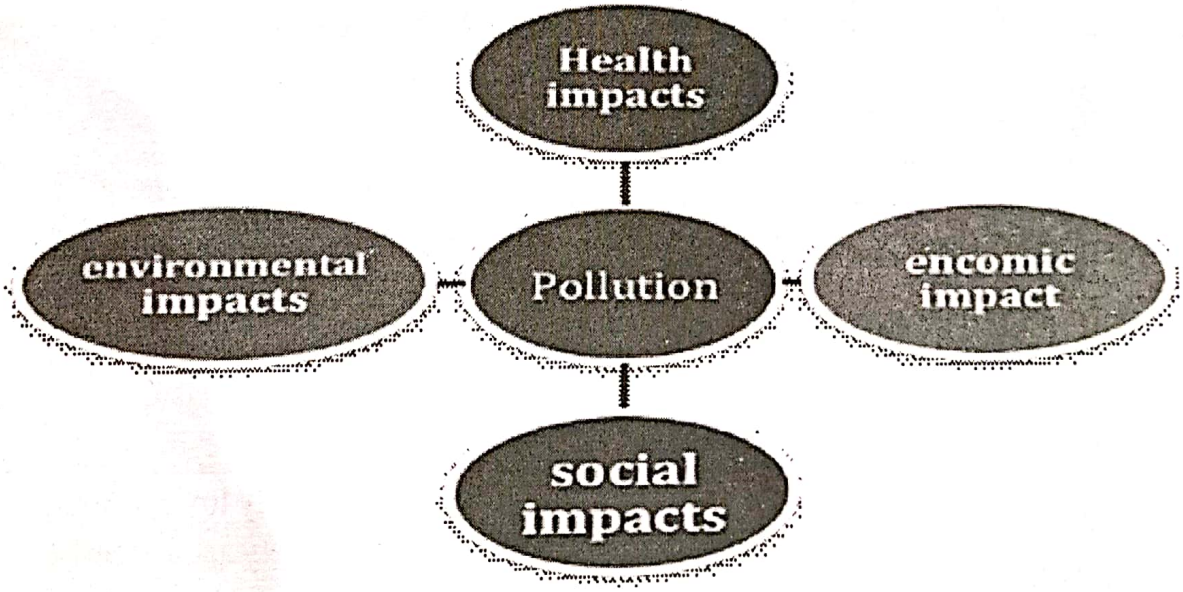

Impacts of Inorganic & organic toxicants

Impact of domestic toxicants:

Various contaminants and pollutants also pollute the indoor environment. According to EPA research air polluted in our houses are more than outer areas. A large number of inorganic and organic pollutants are released when using different products in our daily routine i.e. garden care products, grain and food preservatives, cleaners etc. All the products are health hazardous which causes respiratory problems, skin irritant problems etc. It has been found that some imprecise symptoms in the living beings are found in the indoor atmosphere due to some volatile organic mixture. Such symptoms cannot be explained by scientific methods. Some common domestic toxicants are given here-

Scanned with CamScanner

Some Domestic Toxicants and their effect on the Human body

S No.	Product & Toxic Chemical	Uses & Toxic effect
1	ODONIL Paradichlorobenzene	Insect repellent cakes, toxic, difficulty in Breathing, mutagenic effect
2	ODOMOS N, N-dimethylBenzamide	Mosquito repellent, Toxic, allergies & skin rashes etc.
3	LPG Mercaptans	Used Mercaptans for indicating leakage, Toxic causes sleepiness & giddiness etc.
4	LINDANE BHC	Ant killer, skin irritant
5	GOODKNIGHT Pyrethroids	Mosquito repellent, High toxic, headache Eye & skin irritation etc.
6	BLACK HIT Allethrin	Insect killer, Causes nervousness, anxiety, allergic, rapid paralysis etc.
7	RED HIT Propoxur	Insect killer like cockroaches A headache, paralysis and also Death
8	FINIT Pyrethrin	Insecticide, Highly toxic, causes nervousness, Anxiety and allergic etc.
9	AGARBATTI Formaldehyde	Toxic, carcinogen, eye irritation, cause allergy etc.
10	PESTICIDES Used in vegetables	Toxic, carcinogenic and mutagenic

Scanned with CamScanner

Impact of Industrial toxicants:

India is a developing country where Industrial development has increased rapidly with various toxic substances and gases being released into the environment. Accumulation of released gases into the air, toxic chemicals into the river and various pesticides into the soil are hazardous to the environment. In an earlier time, there were very few Industries and were limited to in the form of small plants but in recent time because of a large number of factories, industrial pollution has increased. Hydroxylamine is used as de-inking process in paper recycling industry. Asthma found in workers caused by NH2OH in paper recycling industry . The inefficiency in the waste disposal from industries often results into soil and water pollution. Air pollutants are oxides of carbon and sulphur, which are obtained by industrial operations, solid waste disposals, transportation and other manufactured activities. Water pollution is caused by the uncontrolled discharge of solid and liquid wastes in the river. Agricultural runoff water, Industrial waste matter and domestic manure are the main sources of water pollution. Water is an essential matter for all living organisms. All living organisms depend on ground and surface water for their need. Water pollution is very dangerous for living organism as they can affect by various water born disease.

Some Industrial toxicants and their hazardous effect

S.No.	Toxicants	Related industry	Hazardous effect
1	Carbon monoxide	Paper mill, production of methyl alcohol etc.	Asthma, anemia, neurotoxemia, disturb the function of hemoglobin etc.
2	Sulfides	Paper & Textile industries	Low blood pressure, depression, anxiety, affected central nervous system etc.
3	Sulfur dioxide	Petroleum industries, power station, sulphuric acid plant	Pulmonary disease, irritation of eye & throat
4	Phenol	Plastic manufacturing	Carcinogen, cyanosis
5	Iodine	Medicine, photography, Dye making	Eye burning, poisoning of the respiratory tract
6	Lead	Storage battery, welding, mining plumbing	Anemia, kidney disease, Vomiting
7	Nicotine	Cigarette smoke, Pesticides	Carcinogenic, Irritant to eye & skin
8	Ammonia	Steel &Chemical industries, Municipal sewage	Pulmonary edema, irritation of eyes
9	Arsenic	Insecticides, rubber & glass production	Carcinogenic, irritant to respiratory system &skin
10	Nitrogen dioxide	Automobile exhaust, dye manufacturing	Bronchitis, respiratory tract Irritation

For developing country like India where the progress of a country is related to industrial productions, workers are essential as the capital of a country. However, workers are facing many problems in working area. Therefore, it is necessary to study various problems of workers that have caused an adverse effect on their health.

Asst. Professor (Chemistry)
HOD- Science Department

■■■

Scanned with CamScanner

"मरने के बाद भी जिंदा रह सकती हैं हमारी आंखे"

नीत कुमार टंडन,
पूर्व छात्र

किसी की अंधेरी दुनिया को रौशन कर
सकते हैं हमारे दो नयन।
इस दुनिया से रूखसत होने के बाद भी
देखते रह सकते हैं हमारे दो नयन।।

मेरी इन दो पंक्तियों से नेत्रदान का प्रयोजन स्पष्ट है। मरणोपरांत किये गये नेत्रदान से अंधत्व निवारण में सहायता मिलती है। अंधत्व अथवा दृष्टिहीनता की समस्या भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक विकराल रूप धारण कर चुकी है। विश्व का हर चौथा व्यक्ति दृष्टिहीन है। एक अंदाज के अनुसार तीस लाख दृष्टिहीन तो 12 वर्ष की उम्र के नीचे वाले व्यक्ति अर्थात् बालक एवं बालिकाएं है। पारदर्शिक पटल या कोर्निया आंख का वह बाह्य भाग है, जिसमें से होकर प्रकाश की किरणें दृष्टिपटल या रेटिना तक पहुंचती हैं एवं हमें किसी वस्तु को देखने का बोध होता है।

नेत्रदान एक अमूल्य दान है, जो किसी व्यक्ति से उसके मरणोपरांत ही स्वीकार किया जाता है। व्यक्ति के जीते जी उसकी आंखे न तो दान में स्वीकार की जा सकती है और न ही उसकी आवश्यकता हैं क्योंकि व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी उसकी आंखे चंद घंटों के लिए जीवित रहती है तथा प्रत्यारोपण के योग्य रहती है।

मृत्यु के उपरांत ग्रीष्मकाल में चार घंटे के भीतर तथा शीत काल में छः घंटों के भीतर आंखे दान स्वीकार की जाती है। एक ही दानदाता अर्थात् डोनर की दो आंखे दो दृष्टिहीन को नेत्र ज्योति प्रदान कर सकती है, दुर्भाग्य से हमारे देश में होने वाला नेत्रदान उंट के मुह में जीरे के बराबर भी नहीं है। इस समय देश में लगभग 45 लाख व्यक्ति कोर्निया ब्लाइंड हैं। प्रतिवर्ष इनमें 40 हजार की बढ़ोत्तरी होती जाती है। एक अरब पंद्रह करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में प्रतिवर्ष केवल 20 हजार के लगभग आंखे दान में प्राप्त होती है। अतः पारदर्शक पटल के रोगों के कारण उत्पन्न दृष्टिहीनता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

विश्व में सर्वाधिक नेत्रदान श्रृंखला में तथा भारत में सर्वाधिक नेत्रदान गुजरात में होता है। कुल मिलाकर संपूर्ण भारत में नेत्रदान की संख्या आवश्यकता से अत्यंत अल्प है। इसका कारण है भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता, रूढ़िवादिता तथा अंधविश्वास। समाज के अनेक वर्गों में यह मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास व्याप्त है कि मृत्यु उपरांत नेत्रदान करने से दानदाता व्यक्ति अगले जन्म में नेत्रहीन पैदा होता है। शिक्षा तथा प्रचार–प्रसार से इस अंध विश्वास का निवारण आवश्यक है लोग यह जानें कि मृत्यु के पश्चात् भी उसकी आंखे औरों के माध्यम से इस विश्व को देख सकती हैं तथा जीवित रह सकती है।

■■■

"मैं सबका हूँ, सब मेरे हैं, अनगिन अंग, एक ही अंगी,
मैं ही रो दूँ तो फिर कैसे धैर्य धरे वो साथी संगी
जिसमें सीख लिया अपनी आँखों के आंसू पीना
उतना ही वह अमर बन गया, जान गया जीवन में जीना"

–डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन–

Scanned with CamScanner

"छत्तीसगढ़ी जनउला (पहेली)"

कु. काजल पाटकर,
बी.ए. द्वितीय वर्ष

(1) फरय न फूलय गजक नहीं जाय।
डलिया म भर के अटरिया जाय।।

(2) चकबाण से बाण नहीं पानी से गजराज।
तीर बाण से बाण नहीं तैं कहां रहे महाराज।।

(3) थोरे पीरा बहुते काँखय।
उठ उठ के भीतर ल झाँकय।।

(4) पानी भरे हिरन खड़े।
पानी सुभ्रवा हिरन भागय।।

(5) चिक निक बुग बाय पीतल के लोटा।
जेन नई जानय तौन भिंदोल के बेटा।।

(6) एक सींग के बोकरी, बेरेर बेरेर नरियाय।
मुँह कोती ले चारा चरय, पाँजर कोती पगुराय।।

(7) एक महल के दू दरवाजा।
ओमा ले निकलय शंभू राजा।

(8) खड़र खड़र खोड़री, दस गोंड़ तीन बोड़री।

(9) एक पर्रा लाई, गिने ल नई गिनाई।।

(10) टेढ़ी, मेढ़ी लकड़ी टेड़गी कइसे हावस।
मैं छू देथंव त रोवत काबर हावस।।

(11) एक चिरई के लट, तेकर दूनो पाँखी पर।
ओखर फोकला उधाड़ तेकर गूदा मजेदार।।

(12) तरी पचरी उपर पचरी बीच म खेलय मंगल मछरी।

(13) बन ल घोलंव बन ल पांचव बन बहेरा आय।
सावन भादों ढ़ील दय त गनगन्ना फांका जाय।।

(14) इकड़ी के दुकड़ी लोहा के मैदान।
तात तात ल झन घूले, हो जाही कल्यान।।

(15) बीच तलाब म टेड़गी रूख।

(16) बीच तलाब म नून गहरी।

(17) छितकी कुरिया म बाघ गुर्राय।।

उत्तर – (1) बीड़ापान (2) पुरी, (3) भूखा प्यासा, (4) दिया बाती, (5) बेल, (6) चक्की या जाता, (7) आँसू, (8) दो बैल और किसान, (9) तारे, (10) बिच्छू, (11) गन्ना, (12) जीभ, (13) नाव, (14) तवा, (15) झींगा, (16) कछुआ, (17) जाता (चक्की)।

■■■

"कोई गाता, मैं सो जाता।
आँखों में भर कर प्यार अमर, आशीष हथेली में भरकर,
कोई मेरा सिर गोदी में रख सहलाता, मैं से जाता"
–हरिवंश राय बच्चन–

Scanned with CamScanner

कैंसर–उपचार से अच्छा है बचाव

–कु. लक्ष्मी वैष्णव,
बी.एससी. तृतीय वर्ष

कैंसर एक आम बीमार बनकर उभरा है। चाहे फिर वह मुँह का हो स्तन का या फिर कहीं और का अब कैंसर है या नहीं यह देखने के लिए डॉक्टर एक नन्हा टुकड़ा काटर कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट में भेज देतें है। पाजिटिव रिपोर्ट आने पर जैसी सुविधा आप कैंसर का इलाज कर सकते हैं, अब यह लाइलाज नहीं है और उपचार पद्धति चाहे देशी हो, होमियोपैथी, यूनानी, नेचरोपैथी, आयुर्वेदिक सभी दावा करते हैं कि वे बिना ऑपरेशन के कैंसर का इलाज करते है। यदि हम कैंसर से बचने के कुछ उपाय करें। तो किसी भी तरह की चिकित्सा की जरूरत ही ना होगी। आईये जाने हम क्या कर सकते हैं इससे बचने के लिए –

(1) ज्यादा खाना खान बंद करें, अधिक कैलोरी वाला खाना न खायें।

(2) खूब फल व सब्जियां खाकर पेट भरें, ये भी लैसर्गिक खाद से बनी हो तो और अच्छा खूब पेक्टिसाइट व केमिकल डालकर उगाई सब्जियाँ गलत हैं।

(3) बने तो रोज लहसून खायें उसकी गंध पसंद नहीं तो कैप्सूल में खायें।

(4) भरपूर पानी पियें, बादाम, किशमिश, काजू जैसे ड्रायफ्रूट खायें।

(5) फल तो अवश्य खायें, विटामिन सी वाले फल हैं मौसंबी, नींबू व संतरा व अन्य फल जैसे अमरूद, अंगूर, जामुन, सीताफल, पपीता व तरबूज।

(6) इधर–उधर का खाने का दिल होने पर धान की लाही व पापकार्न खायें, चाय हरी वाली पींये सबसे बड़ी बात होती है नशे से दूर रहना, चाय, काफी, नस, तबाखू आदि लेना कैंसर को आमंत्रण देना है जैसे गंदा पानी पीने से पेट खराब होना तय है वैसे ही नशे की वस्तुओं से कैंसर के चांसेज ज्यादा होते हैं दूषित रक्त पूरा न जाने से युट्रस(गर्भाशय) का कैंसर तथा बच्चे को भरपूर दूध न पिलाने से स्तन में गाँठ होकर ब्रेस्ट कैंसर (स्तन कैंसर) होता है और सावधानी बरतना जरूरी है न कि डर जाना। कैंसर इज क्यूटेबल है यह सदा याद रखें अपने मनोबल को बढ़ायें ये अच्छा होगा। लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो। हर समय उसका चिंतन करो, उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो।

■■■

"तुम क्या समझोगे प्रभु
इन गत्वारोधों का दर्द
कैसे तरूणाई में ही घुट मर जाते हैं विश्वास।"
–डॉ. धर्मवीर भारती–

Scanned with CamScanner

"कैसे हुआ महीनों का नामकरण?"

– कु. ओमेश्वरी साहू,
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कैलेंडर के हिसाब से साल के बारह महीनों के नाम हम हर रोज दोहराते होंगे लेकिन यह जानने की कोशिश शायद ही कभी की होगी कि इनका नामकरण कैसे हुआ ? दरअसल इन महिनों का नामकरण ग्रीक व रोमन देवताओं के नाम तथा पौराणिक कथाओं पर किया गया है –

जनवरी – जनवरी का नामकरण दरवाजों और रास्तों के देवता जेनस पर किया गया है।

फरवरी – फरवरी का नामकरण एक विशेष समयावधि में फेबरूसलिया पर हुआ इस अवधि में पाप धोने के लिए बलि दी जाती है।

मार्च – मार्च का नाम युद्ध के देव मार्स पर रखा गया है।

अप्रेल – अप्रेल का नाम अपेरिरे से आया, जिसका मतलब है काम की शुरूआत।

मई – मई का नामरण पौधों की समृद्धि देवी मेइया पर किया गया है।

जून – जून शब्द जुनियस से आया जिसका लैटिन भाषा में इस्तेमाल जूनो देवी के लिये किया जाता है।

जुलाई – जुलाई शब्द जुलियस सीजर के नाम से 44 ईसापूर्व लिया गया।

अगस्त – अगस्त शब्द अगस्टस के नाम से 8 ईसा पूर्व लिया गया।

सितम्बर – सितम्बर शब्द सेप्टम से लिया गया, लेटिन भाषा में यह 7 के लिये इस्तेमाल होता है।

अक्टूबर – अक्टूबर शब्द आक्टो से लिया गया यह 8 के लिये प्रयोग होता है।

नवम्बर – नोवेम शब्द से नवम्बर आया इसका अर्थ है 9 का अंक

दिसम्बर – दिसम्बर शब्द डिसेस से आया लेटिन भाषा में 10 को डिसेस कहा जाता था।

■■■

परिभाषा

–श्री तेजेश्वर साहू,
पी.जी.डी.सी.ए.

1. विवेक, सत् और असत् को अलग –अलग जानना विवेक है।
2. वैराग्य, असत्य का त्याग करना वैराग्य है।
3. समः मन को इंद्रियों के विषयों से हटाना सम है।
4. दमः इन्द्रियों को विषयों से हटाना "दम" है।
5. श्रृद्धा : ईश्वर, शास्त्र में पूज्य भाव रखना ही श्रृद्धा है।
6. उपरति : वृत्तियों का संसार की ओर से हट जाना उपरति है।
7. तितिक्षा : सरदी, गरमी आदि द्वन्द्वों का सहना उसकी उपेक्षा करना तितिक्षा है।
8. समाधान : अन्तःकरण में शन्काओं का न रहना मनन है।
9. मुमुक्षता : संसार में छूटने की इच्छा मुमुक्षता है।
10. मनन : परमात्म तत्व का यूक्ति प्रभूकियों से चिन्तन करना मनन है।
11. निहिध्यासन : विपरीत भावना को हटाना निदिध्यासन है।

एकता

–कु. नेहा साहू पूर्व छात्रा

जले दीप, फूल महके, चमन इस तरह सजा दो,
मैं गगन उतार लूँगा, जरा तुम जो मुस्करा दो,
ऐ हवाओं के झकोरों, कहाँ ले के आग निकले,
ये गाँव बच सके तो मेरी झोपड़ी जला दो।
ऐ समय के चाँद–तारों न सँवारों मेरा जीवन,
मेरी जिन्दगी यही है, मेरा देश जगमगा दो।
ये चट्टान नफरतों की, जो पड़ी है रास्ते में,
इसे एकता के हाथों किसी झील में डुबा दो।
मुझे बाद में बनाना, कोई हिन्दु या मुस्लिमाँ,
मुझे पहले एक इंसां प्यार से बना दो।

Scanned with CamScanner

लोक स्वास्थ्य उपयोगी मछलियां

–कु. प्रियंका गुप्ता,
बी.एससी. तृतीय वर्ष

लोक स्वास्थ्य राष्ट्र की सम्पत्ति मानी जाती है, क्योंकि यदि हम देशवासी स्वस्थ है तो संपूर्ण कार्य मन लगाकर कर सकेंगे जिसमें राष्ट्र की सम्पत्ति बढ़ेगी। देश में बहुत सी ऐसी बीमारियां होती है जो जन स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद रहती हैं। इन बिमारियों में से कुछ का संबंध जल से भी रहता है या यह कहा जाये कि इनकी उत्पत्ति जल से ही होती है।

विश्व में मछली पालन आहार के अलावा अन्य कई उद्देश्यों, जैसे लोक स्वास्थ्य आदि के लिए वर्षों से किया जा रहा है। ये मछलियां कुछ निश्चित लार्वा तथा सायक्लोप को अपना भोजन बनाती है। ऐसे मछलियों को लार्वोसाइडल या साइक्लोपसाइडल कहते हैं। ये मछलियां अनेक बीमारियों के जैविक नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, साथ–साथ आय का स्त्रोत भी बनाती है।

मछलियों द्वारा नियंत्रित मुख्य बीमारियाँ :–

मछलियों के द्वारा नियंत्रित मुख्य बीमारियाँ निम्न है –

(1) मलेरिया (2) फाइलेरिया

(3) गिनीवर्म (4) पीलाबुखार या यलोफिवर

इनमें से यलोफिवर बीमारी भारत में नहीं पाई जाती। लोक स्वास्थ्य रक्षक मछलियों द्वारा बीमारियां फैलाने वाले परजीवियों को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से नष्ट करके रोकथाम की जाती है।

(1) मलेरिया – लार्वासाइडल मछलियों के द्वारा मलेरिया का जैविक नियंत्रण किया जाता है। मलेरिया परजीवी का जीवन चक्र मच्छर तथा मनुष्य में पूर्ण होता है। यदि इनमें मच्छर पर नियंत्रण किया जाये तो मलेरिया बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है। चूंकि मच्छर गन्दे जल वाले स्थान, दलदली स्थल, गेंहू या पेडी फिल्ड आदि के जलों में अण्डे देते हैं और अण्डों से निकलने वाला लार्वा कुछ दिनों तक अपना जीवन इन्हीं दलदलों में ही व्यतीत करता है। कुछ मछलियां मच्छरों के लार्वा, प्यूपा, रूछल्ड को अपना भोजन बनाती है। अगर इन जातियों को मछलियों के ऐसे जल में छोड़ दिया जाये तो मलेरिया को बहुत हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

(2) फाइलेरिया – यह बीमारी भी मच्छरों द्वारा ही होता है। ये बीमारी समुद्र किनारे के गरम प्रदेशों में अधिकतर देखने को मिलता है। इस बीमारी में मनुष्य के अंग फूल जाते हैं। अतः इसकी भी रोकथाम मछलियों द्वारा किया जा सकता है।

(3) गिनीवर्म – यह बीमारी साइक्लोप्स द्वारा फैलाई जाती है। यह बीमारी डेकनलूवस मेडिनेन्सिस परजीवों द्वारा फैलता है, जो अपना जीवन मनुष्य तथा साइक्लोप पर व्यतीत करता है। अतः ऐसी बीमारी का नियंत्रण जल में साइक्लोप सिडल मछलियों को पालकर किया जा सकता है। क्योंकि साइक्लोप का जीवनचक्र जल में ही पूर्ण होता है।

प्रजातियों का चयन –

कोव्हल नामक वैज्ञानिक ने 1927 में जल से पैदा होने वाली बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए जहां मच्छरों का प्रजनन व साइक्लोप अधिक मात्रा में होते हैं ये मछलियां संचित की जाती है। इन मछलियों के संचय के पूर्व इनका चुनाव निम्नानुसार होना चाहिए :–

(1) मछली छोटी होनी चाहिए ताकि वह उथले पानी में आसानी से रह सकें।

(2) ये ताप से उतार चढ़ाव को आसानी से सहन कर सकें।

(3) मछलियां रूके हुए पानी में प्रजनन कर सकें ताकि –

(अ) उसके कुल या फाना में वृद्धि हो।

(ब) प्राकृतिक मृत्यु की वजह से उनकी संख्या में कमी न आने पावें।

(स) शिकारियों से होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति हो सके।

(4) ये मछलियां परिवहन की कठिनाईयों को सहन कर सकें।

(5) इनमें शत्रुओं से बचाव की क्षमता होनी चाहिए।

(6) इन मछलियों का भोजन के रूप में महत्व होना चाहिए।

■■■

Scanned with CamScanner

"भारत में जैव विविधता"

– कु. रेणु सेन,
बी.एससी. तृतीय वर्ष

भारत को विकासशील देशों में रखा जाता है। वर्तमान में औद्योगिक विकास क्षेत्र में पूर्ण विकसित नहीं माना जाता लेकिन विकासशील देशों में कुछ अधिक विकसित हैं। यहां कि भौगोलिक दशा में अत्यधिक भिन्नता पाई जाती है। इसके साथ यहां जैव विविधता है। यहां की प्रकृति व्यवसाय, कृषि, पशुपालन, मछली उद्योग, वानिकी, औषधि उद्योग और जीव मण्डल को स्तर उत्तम है। साथ ही औषधि का देशज तंत्र, सांस्कृतिक विविधता हमारे पूर्वजों की बुद्धि एक ज्ञान की जैव विविधता को आधार देता है।

जैव विविधता की परिवर्तनशीलता निम्न कारणों की भिन्नता से है –

1. अंक्षाशीय एवं देशांतरीय स्थितियां
2. वनस्पति
3. जलवायु
4. उंचाई
5. भूगर्भ

भारत के भौगोलिक क्षेत्र 32,68,090 वर्ग कि.मी. है। इसके स्थलीय सीमा 15,200 वर्ग कि.मी. और समुद्र तट 6,100 वर्ग कि.मी. है। यहां लगभग जलवायु की सभी श्रेणी पायी जाती है। अत्यधिक ठंडी क्षेत्र से लेकर अत्यधिक गर्म क्षेत्र सब पाये जाते है। वर्षा सबसे कम तथा सबसे अधिक 200 से.मी. से अधिक क्षेत्र भी है। सीमा की दृष्टि से भारत विश्व का सातवां स्थान (कुल क्षेत्रफल 2.17 प्रतिशत) है। यहां कुल वनस्पति एवं जीव की 5 प्रतिशत प्रजातियॉ पायी जाती है। विश्व की कुल वनस्पति एवं जन्तुओं की 15 लाख जातियों में विश्व में पौधों की लगभग 2 लाख 50 हजार प्रजातियॉ पायी जाती है। भारत में लगभग 4500 प्रजातियां जिनमें से 15 हजार प्रजातियां पुष्पीय एवं 30 हजार पुष्प ही के हैं।

भारत में प्राणियों के लगभग 68371 प्रजातियां पायी जाती है। ये समस्त प्राणियों का वितरण धरातल, स्वच्छ जल, खारा जल में या परजीव सहजीवी के रूप में रहती है।

भारत में जैव विविधता 1994

जन्तु का नाम	संख्या	प्रतिशत
जीवाणु	850	00.8
कवक	23000	21.2
शैवाल	25000	02.3
ब्रोयोफाइटा	2564	02.4
पेरीडोफायटा	1022	00.9
जिम्नोस्पर्म	64	00.1
कीट	53430	49.3
एजियोस्पर्म	1500	13.9
मोलस्क	5050	04.7
मत्स्य	2546	02.4
उभयचर	204	00.2
सरीसृप	446	00.4
पक्षी	1228	01.1
स्तनी	372	00.3
कुल प्रजातियां	108276	100 प्रतिशत

Scanned with CamScanner

जैव विविधता दो विधियों के संरक्षण पर कार्य करता है –

(अ) इन सिटू संरक्षण – इसके अंतर्गत जीव–जन्तु एवं वनस्पति के मूल आवासों में ही किया जाता है। भारत में सुरक्षित क्षेत्रों द्वारा प्राणी जगत व वनस्पति जगत को संरक्षण का कार्य बहुत पुराना है। देश में सुरक्षित क्षेत्रा चौथी शताब्दी बीसी से अभ्यारण्यों का सुरक्षित वनों के रूप में स्थापित किये जा रहे है। देश के वन नीतियों के निर्धारण के लिए भारत को सलाह देने के लिए सलाहकार समिति बनाई गई 'इण्डियन बोर्ड' फार वाइल्ड लाइफ' 1952 में बनाया गया यह अभ्यारण्य प्राणी उद्यान राष्ट्रीय उद्यान को संचालित करती है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में 74 राष्ट्रीय पार्क और 421 राष्ट्रीय अभ्यारण्यों की स्थापना की गई। जो 1,41,216 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है। यह देश के कुल क्षेत्रफल का 4 प्रतिशत भाग में आता है। वर्तमान में 74 राष्ट्रीय उद्यान तथा 438 अभ्यारण्य है।

(ब) एवस सिटू संरक्षण – (आवास स्थान से अलग संरक्षण) जीव एवं वनस्पति को संभालकर आवास से दूसरे स्थान ले जाकर उन्हें संरक्षण दिया जाता है। जिन्हें कृत्रिम आवास संरक्षण कहते है। यह कार्य कई संस्थानों द्वारा किया जाता है। 1. वानिकी संस्था, 2. वनस्पतिकी उद्यानों, 3. कृषि अनुसंधान केन्द्र, 4. अन्य संरक्षण केन्द्र।

1. जीन बैंक – वनस्पति उद्यानों में अत्यधिक संख्या ऐसे पौधे जिनकी जाति एक होती है से ज्ञात वन विविधता का प्रतिनिधित्व करता है। इन्हें संरक्षण के उद्देश्य से संभालकर रखा जाता है। जिन्हें जिन बैंक कहा जाता है।

2. बीज बैंक – एवस सिटू संरक्षण के लिए बीज बैंक सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी विधि है। इसमें लैगिंक रूप से प्रजनन करने वाले वनस्पतियों के बीज को लंबे समय तक संग्रहित करके रखा जाता है।

3. इनविटो स्टोरेज – देश में कई ऐसी संस्थानों के द्वारा वन्य वनस्पति जगत का परीक्षण किया जा रहा है। जिसे इनविटो संग्रहण कहते है।

इनविटो का तात्पर्य ग्लास में जर्मप्लाज्मा के संग्रहण के अंतर्गत वनस्पतियों का संग्रहण प्रयोगशाला में प्रयोग किया जाता है। जर्मप्लाज्मा संग्रहण के लिए इनविटों प्राणिभिजी शीर्ष कलिका या तना शीर्ष द्वारा लगाया जाता है और परीक्षण नलिका में इनको विभाजन द्वारा बढ़ाया जाता है।

जैव विविधता संरक्षण 1992

जैव विविधता संरक्षण मानव का प्रमुख कर्तव्य है। जैव मंडल की व्यवस्था को विकास एवं संरक्षण के लिए जैवविविधता आवश्यक है। इस अधिनियम को जीव एवं वनस्पति के जीन के संरक्षण हेतु बनाया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य यह है कि विकसित देशों के द्वारा जीव एवं वनस्पति के दुलर्भ प्रजातियों का अधिक उपयोग को रोकना एवं संरक्षण देना, जिसे अमेरिका इस अधिनियम को कड़ा रूख अपनाया, जिसकी आलोचना जर्मनी, ब्रिटेन, जापान, यूरोप ने किया, जिससे अमेरिका की स्थिति विषम हो गई और अलग–थलग पड़ गया। बहुत विचार विमर्श के बाद अमेरिका ने इस अधिनियम को 22 मई 1992 को नौरोबी में अपना शर्त रखकर हस्ताक्षर किया, भारत ने इस पर हस्ताक्षर किया। जापान द्वारा इस अधिनियम पर हस्ताक्षर करने के विषय में संकेत दिया कि वह ब्रिटेन तथा अन्य ग्यारह यूरोपीय देशों के साथ अधिनियम पर हस्ताक्षर करेगा। इस अधिनियम को लागू करने के लिए 30 देशों के समर्थन की आवश्यकता थी, 30 देशों का समर्थन मिलने पर यह 29 दिसंबर 1993 को लागू हो गया।

जैव विविधता का यह अधिनियम अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें पोषणीय उपयोग जेनेटिक संसाधनों का उपयोग लाभों का उचित एवं सांख्यिकीय हिस्सेदारी सुनिश्चित करना है। जो वर्तमान के लाभ के साथ आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए आवश्यक है।

अधिनियम 1992 के निम्न तत्व हैं जो जैव विविधता संरक्षण हेतु बनाएं गए हैं –

1. जैविकीय संसाधनों के संरक्षण हेतु विनिगयों का अंगीकरण करना।
2. सामान्य अवस्था स्थान से अलग संरक्षण संबंधी उपबंध।
3. आनुवांशिक संसाधनों तक पहुंच कर उनका स्वामित्व प्राप्त करना।
4. जैव प्रौद्योगिकी तक पहुंचना और उसका विनिमय।
5. तकनीकी एवं वैज्ञानिक सहयोग।
6. विकासशील राज्यों को अनुवांशिक पदार्थों के निष्कर्ष के लिए प्रतिकार दिया जाना।

Scanned with CamScanner

चिकित्सा सेवा की सात पहली घटनाएँ

–कु. पूर्णिमा साहू,
पूर्व छात्रा

(1) स्वाइन फ्लू का पहला मरीज –

मैक्सिको के ला ग्लोरिया का एक 4 साल का लड़का एजर हर्नांडिज जिसे निनो सेरी (छोटा बच्चा जीरो) कहा जाता है। यह लड़का दुनिया में स्वाइन फ्लू का शिकार हुआ। यह प्रथम मरीज माना जाता है। इस लड़के की एक प्रतिमा मैक्सिको के ला ग्लोरिया शहर में लगाई गई है। जो इस बीमारी के वायरस एच एन 1 पर विजय का प्रतीक है। मैक्सिको में इस बीमारी की शुरूआत हुई थी और मैक्सिको में करीब 19,000 लोग इस बीमारी से ग्रसित हुए हैं।

(2) प्रथम टीका –

शिक्षाविद ओले ल्यूंड के अनुसार, टीकाकरण के क्षेत्र में प्राचीन चीन निवासियों ने काफी प्रगति की थी और ऐसे साक्ष्य हैं कि 200 बीसी में चीन में टीके का प्रचलन था। इस बात का सबूत भी है कि 17वीं शताब्दी के भारत में भी टीके का प्रचलन था। उस जमाने में लोगों कों स्मालपॉक्स बीमारी से लड़ने के लिए पाउडर के रूप में टीका दिया जाता था। वैसे प्रथम टीका विकसित करने का श्रेय एडवर्ड जैनर को दिया जाता है जिन्होंने 1798 में स्माल पॉक्स का टीका बनाया था।

(3) एड्स से पहली मौत –

इस बारे में पुख्ता जानकारी तो उपलब्ध नहीं है परंतु एच. आई.व्ही. से ग्रस्त पहला इंसान कांगो देश का निवासी था। जिसकी मृत्यु इन्फेक्शन से हुई थी। उसकी मौत के बाद की गई खून की जाँच से पता चला था कि उसे एच.आई.वी. इन्फेक्शन था। यह 1959 की बात है। लेकिन कई चिकित्सक इसे सही नहीं मानते। उनका तर्क है कि उस इंसान के 6 जीन में से मात्र दो में ही एड्स के वाइरस पाए गए थे। इसलिए पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि वही एड्स का प्रथम शिकार था।

(4) प्रथम टेस्ट ट्यूब शिशु –

लुइस जोरा ब्राउन दुनिया की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी है। लुइस का जन्म ब्रिटेन में 25 जुलाई 1978 को हुआ था। इस जन्म को जहां चिकित्सा क्षेत्र की उपलब्धि माना गया वहीं कई लोगों ने इस बात पर आपत्ति भी जताई कि भविष्य में इसका दुरूपयोग हो सकता है।

(5) दिल की पहली बाइपास सर्जरी

2 मई 1960 को अल्बर्ट आइंस्टाइन कॉलेज ऑफ मेडिसीन ब्रोंक्स म्यूनिसिपल हॉस्पिटल सेंटर के डॉ. राबर्ट गोएटज, डॉ. माइकल रोहमन और सहायक चिकित्सक डॉ. जोर्डन और डॉ. रोनाल्ड डी.ने प्रथम कोरोनरी आर्टरी बाइपास सर्जरी की थी।

(6) प्रथम संपूर्ण चेहरा रीप्लांट

भारत की संदीप कौर दुनिया की पहली इंसान है जिसका पूरा चेहरा फिर से रीप्लांट किया गया है। 1994 में 9 साल की संदीप का सिर एक थ्रेशर में आ गया था और उसके चेहरे के दो टुकड़े हो गये थे। उसके अभिभावक उसके चेहरे को प्लास्टिक के बैग में डालकर डॉ. अब्राहम थामस के पास ले गए। सूत्रों के अनुसार डॉ. अब्राहम ने संदीप की सफल शल्य चिकित्सा कर उसके टूटे हुए चेहरे को फिर से जोड़ दिया था। आज संदीप नर्स का काम करती है।

(7) लीवर का पहला प्रत्यारोपण

यकृत प्रत्यारोपण का प्रथम सफल आपरेशन अमरीका के डेनवर शहर के डॉ. थामस स्टार्ज ने किया था। यह 1967 की बात है, जब इस तरह का प्रत्यारोपण प्रायोगिक स्तर पर किया गया।

■■■

Scanned with CamScanner

लापता की तलाश

– कु. पुष्पा चकधारी, पूर्व छात्रा

सज्जनों,

एक दुबली–पतली गोरी सी लड़की, जिसकी उम्र कुछ हजार साल है, जो सच्चाई की बेदाग उजली साड़ी और विकासोन्मुख मूल्यों की चिन्हित कंचुकी पहने है।

विश्व के बाजार से गायब हो गयी है। कहते है सभ्यता की सड़क पर अनैतिकता की मोटर गाड़ी पर सवार कुछ ओर भौतिकवादी अपराधी उसे उठा ले गये।

बुद्धिवादिनी पुलिस देखती रह गयी, आप सबसे प्रार्थना है

जो उसे पाये घर पहुंचा दे, सब खर्च के अतिरिक्त इनाम भी दिया जायेगा।

लड़की का नाम है 'मानवता'।

■■■

"बेटियां"

–कु. तामेश्वरी मानिकपुरी,
बी.ए. द्वितीय वर्ष

(1) बोये जाते हैं बेटे, उग जाती हैं बेटियां।
खाद पानी बेटों में, लहूलहाती है बेटियाँ।
पढ़ाई करते हैं बेटे, सफलता पाती हैं बेटियाँ।
एवरेस्ट पर ठेले जाते हैं बेटे, चढ़ जाती है बेटियाँ।
कुछ भी कहो पर अच्छी हैं बेटियाँ।

(2) चिड़िया आई घोसले में चूजों ने पूछा –
माँ आकाश कितना बड़ा है।
चिड़िया ने बच्चों को पंख के नीचे
समेटते हुए कहा – सो जाओ इससे छोटा है।
मातृ शक्ति तुम्हें नमन

■■■

रात की बिदिया

– श्री संजू वर्मा
प्रयोगशाला परिचारक

रात और दिन दो सगी बहन।
दिन है बड़ी छैल छबीली,
रात है थोड़ी सी शर्मीली।
दिन का है ऐसा रहन सहन,
निकलती है वो रंग बिरंगी पोशाक पहन।
दिन करती है ढेरों साज–सज्जा
जिस पर आये नादान रात को लज्जा
पर इक दिन उसकी भी इच्छा जागी,
के भी कुछ श्रृंगार करें जन मानस
उसके रूप का भी गान करें।
दौड़ी भागी रात अकेली
राह में मिल गयी सांझ सहेली।
रात ने अपनी इच्छा बतलाई।
सांझ ने हाथ शाम एक तरकीब सुझाई।
टांक लायी सितारें अपनी स्याह चूनर पर
औठ लिया रात ने उसे झूम–झूम कर
संग लगाली एक लाल चांद की बिंदिया।
और देखो उड़ा दी मेरी आंखों की निंदिया।

Scanned with CamScanner

मानवता

–कु. सीमा साहू
पूर्व छात्रा

एक जमाना था जब मानव मानवता के पीछे भागता था कि कहीं यह हमसे बिछुड़ न जाये और दूसरी जिंदगी पशुवत होकर रह जाय। आज मानवता मानव के पीछे भाग रही है कि मानव मेरे बिना जिंदगी को ही न खो दे। पर मनुष्य है कि उसे भुलाये, अपनी रंगरेलियों, फैशनपरस्ती में अपने को लपेटे हुए है।

आज जहाँ भी देखो, जिस ओर नजर दौड़ाओ, स्वार्थसिद्धि मुँह बाये हमारी ओर बढ़ती दिखाई देती है। किसी को भी इतनी फुर्सत नहीं कि दूसरों के दुखों को समझने में अपना कुछ समय दें, कि लोग क्यों व्याकुल हैं, क्यों हाहाकार मचाये हुए है। किसी भी तरह हमें अपने सुखों को बटोरना है, भले ही दूसरों का अहित होता हो। लोग पहले दूसरों के हित के लिए प्राण से अपने को अर्पण कर देते थे और आज दूसरों के अहित की ही सामग्री जुटाने में प्राणपण से लगे हुए हैं ?

क्यों? आखिर क्यो यह पतन का रास्ता लम्बा और लम्बा, विशालकाय दैत्य के समान बढ़ता जा रहा है। क्यों हम अपने को, इस देश को और इस पर मर मिटने वाले महापुरूषों को भुला बैठे है ? और क्यों हम अपनी लाल साओं को उकसाने में जुटे हैं ?

गरीबों की चीख–पुकार , नंगे–भूखों की ललकार हमारे दिलों को हिला पाने में, दिमागों को झकझोर सकने में क्यों असमर्थ है? क्योंकि हम अपने से बाहर कुछ देख नहीं सकते। देखना ही नहीं चाहते। इसीलिए त्याग, बलिदान, दया, प्रेम की भावनाओं को संजो नहीं पाते।

सच्ची मानवता दूसरों के हित, दूसरे के अधिकारों को महत्व प्रदान करने में निहित है। मात्र अपना हित अपने अधिकार मानवता विरोधी है।

सब अपने अधिकार चाहते है। उसके लिए लड़ते है और साथ ही औरों के अधिकारों में हस्तक्षेप भी करते है। वे यह क्यों भूलते हैं कि अधिकारों की जितनी हमें जरूरत है उतनी ही दूसरों को भी। जो भी चाहता है, केवल लेना चाहता है। देने में सुख है, इसका अनुभव ही किसी को नहीं हो पाता।

हड़तालें होती है अधिकार के लिए। जनता चीख–पुकार मचाये हुए है, अधिकारों के लिए। और शासन है कि अपने अधिकारों को बचाकर ही अधिकार देना चाहता है। यह चीखती मानवता, फुटपाथों पर तड़पते नंगे भूखे लोग, बेघर–बार लाखों इंसानों के अधिकारों के लिए कौन लड़ता है? आज उँची अट्टालिकाएं और उँची होती जा रही है, झोपड़ियां भूमिगत होती जा रही है। अमीर और अमीर , गरीब और गरीब होते जा रहे है। जो खाकर सोता है, वह उठते ही खाता है। जो भूखा सोता है, वह सारे दिन भूखा रहता है। यदि यही हाल रहा तो मानव की मानवता हीन धरती केवल बर्बर पशुओं का आवास बनकर रह जायेंगी।

■■■

"मधुशाला वह नहीं, जहाँ पर मदिरा बेची जाती है।
भेंट जहाँ मस्ती की मिलती, मेरी तो वह मधुशाला।"
–डॉ. हरिवंशराय बच्चन–

Scanned with CamScanner

बातें काम की

– श्री पोखराज साहू, बी.कॉम तृतीय वर्ष

कभी कभी छोटी–छोटी बातें बड़ी समस्या का रूप ले लेती है। जिनको ये छोटी–छोटी जानकारी बड़ी आसान बना देती है। मेरा अनुभव यदि आपके काम आ जाता है तो मुझें अनजाने ही शुभकामनाएं ही मिलेंगी आईये देखें क्या और कैसे–

1. आम और नींबू के अचार बनाते समय या अन्य किसी भी तरह फर्श पर खट्टा रस लगने से सफेद धब्बे बन जाते हैं जो धोने से भी नहीं निकलते उन पर किसी भी तरह का तेल लगा दीजिए धब्बे निकल जायेंगे।
2. अरी ये क्या? कपड़े पे घी या तेल गिर गया ना....ना.... ना.... धोने से इतनी जल्दी छुटकारा नहीं मिलेगा उस स्थान पर ज्यादा टेलकम पावडर छिड़ककर कुछ देर रहने दें फिर ब्रश मार दें।
3. होठ बार–बार रूखे होकर फट रहे हैं? घी में थोड़ा नमक मिलाकर दिन में तीन बार लगाएं होठ मुलायम रहेंगे।
4. बाल पेन की स्याही का दाग को निकालने के लिए नेल रिमुवर का इस्तेमाल करें।
5. किसी कपड़े में च्युंगम चिपकी है तो उसे थोड़ी देर फ्रिज में रखे निकल जायेंगी।
6. बोतल में रखा गोंद सूख गया हो तो विनेगर की कूछ बूंदे डाल दें गोंद फिर से उपयोगी हो जायेगा।
7. मोमबत्ती को पालीथीन में लपेटकर पांच छः घंटे फ्रिज में रख दें, ज्यादा देर जलेगी।
8. अरे आप चूहों से परेशान है तो उनके रहने की जगह पर पूदिने की पत्तियां बिखेर दें।
9. तिलचट्टे या कॉकरोजों से परेशान है तो बियर की एक बोतल खाली करके रसोई में रख दें सुबह उसमें अनेक कॉकरोज मरे पड़े रहेंगे।
10. सुई को जंग लगने से बचाने के लिए पावडर डालकर बंद डब्बे में रखे।
11. हल्दी के दाग को मिटाने के लिए संतरे का छिलका रगड़े।
12. किसी के फोन पर अभी–अभी किससे बात की है जानने के लिए रिडायल दबायें पता चल जायेगा, आपकी किससे बात हुई कोई न जाने इसके लिए फोन बंद कर दुबारा दूसरे नंबर डायल करके बंद करें।

■■■

मोर छत्तीसगढ़

श्री पुरानिक राम साहू

मोर छत्तीसगढ़ के कोरा मा सोन भरे
एकर अंचरा सोनहा बरोबर हे
तै गिरा पसीना मोती बनही
एकर धुर्रा चन्दन बरोबर है
तै राम कहिबे लक्ष्मण उठही
हर बहिन सुभ्रद्रा बरोबर है।
मैं इही कोरा मा जनमेव गा
मोर माथ मा तिलक लगे माटी
मोर तन इही संवारिस गा
मोर करम धरम हे इही माटी
तोर दुख मा इही बिलखथे गा
तोर सब सुख मा गाथे इही माटी।
इही माटी के गंगा महानदी
तोर जम्मो पाप धोवईया ए
राजिम लोचन संग शिव बिराजे इहॉ
सब सुख शांति के देवइया ए
इहें ले जनसिम बल्लभ प्रभूजी
जीवन के मार्ग बतइया ए।
मैं जान किस्सा पुरखा के
ओसने नवां किस्सा बनाहूं गा।
संग ले बइला कांध में नांगर
धरती ला हरियर रंगाहूं गा
मोर भुजा मा अतका बल हावे
पथरा मा पानी ओगराहूं गा।

मुख्य लिपिक

Scanned with CamScanner

"सशक्त नारी"

–कु. ईशा साहू,
बीकॉम तृतीय वर्ष

पतझड़ के बाद जैसे बसंत का आगमन होता है, आज उसी प्रकार समूचे विश्व में परिवर्तन का शंखनाद हो रहा है। पूरा विश्व चाहता है कि परिवर्तन हो और वह ऐसा क्यों चाहता है कि यह परिवर्तन हो, जबकि सृष्टि की रचना होने के साथ पुरूष वर्ग संसार में वर्चस्व चला रहे है। अपने आप को सभी क्षेत्रों में निपुण मानते हैं। फिर उन्हें यह आवश्यकता क्यों आ पड़ी की आज नारी को जागरूक होना चाहिए। नारी ने तो कभी माँग नहीं की वे चार दिवारी में कैद रहकर पुरूष द्वारा किये जाने भीषण अत्याचार को सहन करने के लिए अपने को तैयार कर ली थी। आज चारों तरफ से सुनाई दे रहा है कि अब नारी ही आगे बढ़कर समाज को अद्योपतन अथवा विनाश से बचा सकती है। ऐसा इस पुरूष समाज के चिन्तनशील लोगों ने महसूस किया है और नारी के सर्वशक्तिमान होने को स्वीकारा है। उसके शक्ति की मदद चाहने के लिए उसे शिक्षित किया जाने लगा, सभी क्षेत्रों में बराबर का हक मिलने लगा, जैसे जीविकोपार्जन, राजनीति जितने भी क्षेत्र संचालित है, उन सभी में नारी को सहभागिता प्रदान की जाने लगी। लम्बे समय से आधी जनसंख्या नारी के रूप में दुर्गतिग्रस्त स्थिति में पड़ी थी, अधिकारों की दृष्टि से उसे मनुष्य तथा पुरूष के बीच का प्राणी समझा जाता था, घर उनके लिए जेल खाना था।

जीवन की सामान्य जरूरतों के लिए उन्हें पुरूषों पर आश्रित रहना था। वर्तमान समय महान परिवर्तन का समय लेकर आया है, मुकुट धरासायी हो गया है, सामन्तों का दबदबा समाप्त हो गया है। इक्कीसवी सदी में विनाश विकास के रूप में पलटने जा रहा है। और यह श्रेय नारी जागरण के रूप में नारी को मिलने जा रहा है। ईश्वर के रूप में पलटने जा रहा है, और यह श्रेय नारी जागरण के रूप में नारी को मिलने जा रहा है। ईश्वर ने नारी को मुक्तिदूत बनने का दायित्व भी सौंपा है। जिसे आगे बढ़कर नारी को उसका स्वागत करना चाहिए और यह काम जो नारी जागरूक एवं शिक्षित है वह आगे बढ़कर नारी के गरिमा का गान कराने के लिए जिन जागते उदाहरणों जीवन प्रसंगों की जानकारी कराना अनिवार्य है। इतिहास बताता है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक संसार के हर क्षेत्र में जब–जब अवसर मिला है, समाज निर्माण हो चाहे राष्ट्र निर्माण, स्वाधीनता की कांति हो, पिछड़ों को आगे बढ़ाने अथवा पुण्य परमार्थ लोक मंगल का क्षेत्र रहा हो, उसने भूमिका खूब निभाई है। ये वे जीती जागती मिशालें हैं जिनसे प्रेरणा लेकर आज की नारी अपने आप को बन्धनमुक्त अभ्युदय पथ प्रसस्त कर सकती है, यहीं ईश्वर की इच्छा है। इसे पूरा करने के लिए अपने निजी उलझनों को एक कोने में रखकर प्रधानता इस बात को दें कि अपनी भूमिका असाधारण और सबसे अधिक बढ़चढ़कर हो, नारी को सोचना है कि मैं पढ़ती हूं सन्तान को शिक्षा देने के लिए पति के थके मन को शांति देने के लिए मेरा ज्ञान मानव जीवन में प्रकाश फैलाने के लिए है मैं गाती हूं, नाचती हूं, शौकिनों की लालसा पूरी करने के लिए नहीं नर हृदय को कोमल बनाकर उसमें पूर्णता लाने के लिए, पुरूष की सोई संवेदना जगाने के लिए, मैं स्वयं नहीं नाचती वरन जगत को नचाती हूं, मैं अबला , गुलाम, असहाय एवं दूर्बल नहीं हूँ, मैने ही आदर्शो का सृजन किया है।

मानव को महामानव बनाया है, महात्मागांधी, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, अरविंद आजाद, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिसमिल जैसे सपूतों को गोद में खिलाया है। मुझकों अबला क्यों कहा आपने मुझसे ठीक से पहचान नहीं तो लो पहचान लो, मैं नारी हूं, इक्कीसवीं सदी में अपना प्रभुत्व लेकर रहूंगी।

■■■

"होशियार! कुछ दूर नहीं है लाल सबेरा आने में
लाल भवानी प्रकट हुई है, सुना कि तेलंगाने में"
–नागार्जुन–

Scanned with CamScanner

विचित्र, किन्तु सत्य

– विशाल शर्मा,
पी.जी.डी.सी.ए. छात्र

1. कभी गौर किया है, स्त्री पुरूषों के लिबास में लगे बटन का स्थान कैसा होता है? स्त्रियों के लिबास में बटन बाई तरफ लगे होते है और पुरूषों में दाई तरफ।
2. किसी व्यक्ति की पहचान के लिए उसके फिंगर प्रिंट यानी अंगुलियों के निशान लिए जाते है अगर किसी कुर्ते की पहचान करनी हो तो उसकी नोज प्रिंट यानी नाक के प्रिंट किये जाते है।
3. विश्व में स्वीट्जरलैंड एकमात्र देश है जिसके झंडे का आकार चौकोर है।
4. गधों के समूह को अंग्रेजी में पेस और मच्छरों के समूह को क्लाउड, मोरों के समूह को मस्टर और नन्ही बिल्लियों के समूह को किन्डल कहते है। सिंह का समूह प्राइड, कौओं के समूह को मर्डर, वयस्क बिल्लियों के समूह को क्लटर, सांपों के समूह को डेन, बुलबुल के समूह को वॉच छिपकलियों के समूह को बान्ज कहते है।
5. रूपयों को देखकर यही लगता है कि यह कागज के बने है पर यह सच नहीं है नोट कागज के नहीं कॉटन यानी सूत से बनते है।
6. पूरी दुनिया में भारत की गंगा नदी ही एकमात्र ऐसी नदी हैं जहां ताजे पानी वाली शॉर्क पायी जाती है।
7. अल्ताफ राजा के तुम तो ठहरे परदेशी नॉन फिल्मी केटेगरी में बिकने वाला वह एलबम था जिसके 40 लाख से ज्यादा कैसेट्स बिके।
8. बिकने वाली घड़ी दुकान में, विज्ञापन में 10:10 सेंकेंड दर्शाती है क्यो? ताकि निर्माता कंपनी का नाम मुस्कुराहट में नजर आए। गांधी जी की मृत्युपरांत बंद घड़ी इसी रूप में थी इसलिए तब से निरंतर बंद घड़ी के कांटे 10:10 ही रखे जाते है।
9. राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम बंकिमचंद चटर्जी द्वारा रचित है, जिसे 24 जनवरी 1950 में राष्ट्रीय गीत का स्थान मिला था एवं श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित जन–गण–मन अधिनायक जय है गीत को राष्ट्रगान पुकारा जाता है।
10. राष्ट्रीय पुष्प कमल, राष्ट्रीय पक्षी मोर है। राष्ट्रीय पशु बाघ है। राष्ट्रध्वज में समान अनुपात में तीन पट्टियां आती है केसरिया, सफेद, हरी रंग की लगाई जाती है। जो कमशः शौर्य और त्याग सत्य व सादगी एवं जीवन की हरियाली व समृद्धि के प्रतीक स्वरूप है। सफेद पट् पर ही गोल चक्र में 24 तिलियों वाला गहरा नीला अशोक चक्र निरंतर उन्नति का परिचायक है। ध्वजा की लंबाई चौड़ाई 3:2 है।
11. ताजमहल की ताजगी अब भी बरकरार है जबकि मुगल सम्राट शाहजहां ने बेगम मुमताज की याद में 1631 में उसे यमुना किनारे आगरा में बनवाया था। जो कि 1647 में पूरा हुआ था। यानी 16 वर्ष लगे थे।
12. हीरा ही एकमात्र नग है जिसे ऐसिड से गलाया नहीं जा सकता सिर्फ आग से इसे नष्ट कर सकते है।

■■■

"मानव का रचा सूरज मानव को भाप बन कर सोख गया
पत्थर पर लिखी हुई यह जली हुई छाया
मानव की साखी है।"

–रामधारी सिंह दिनकर–

Scanned with CamScanner

माँ

– श्री पप्पू सेन,
बी.एससी. तृतीय वर्ष

माँ मेरे जीवन पथ पर,
कुछ कांटे हैं, कुछ कलियाँ हैं।
तेरे आँचल के आश्रय में,
पलती मेरी ये दुनिया हैं।।

काँटों को चुनकर दूर किया पर
लड़ना भी तुम्हीं ने सिखलाया,
हर नई राह हर नए मोड़ पर,
मैंने तुम्हें साथ पाया।
तुममें मैंने देखा है माँ,
त्याग–शक्ति–संघर्ष समास।
इन सबके बदले देने को,
नहीं कुछ रहा मेरे पास।

हृदय अथाह प्रेम का सागर,
गोद तुम्हारी ममतामयी।
तुमसी माँ हर जन्म में पाउँ,
यही प्रार्थना करे "छवि"।

■■■

जय छत्तीसगढ़ राज

– श्री राहुल इसरानी,
पूर्व छात्र

जनम जनम के सपना जम्मो सिरतो होही आज।
सब छत्तीसगढ़िया अब बोलव जय छत्तीसगढ़ राज।।
बड़ दिन मा धरती के देवता किरपा करिन हे आज।
नोनी के दाई झन डरावा, जय छत्तीसगढ़ राज।।
पाये रहेने सन् सैतालिस म भारत देश सुराज।
बछर पचास के बाद मिलिस हे जय छत्तीसगढ़ राज।
सबले बड़े तिहार मानबो नाचा गावा आज।
गड़वा बाजा बजवा देवा, जय छत्तीसगढ़ राज।।
छिड़कन देबे निशान मोहरिया, मोहरी ल तै साज।
टिमकी वाला शुरू करा अब, जय छत्तीसगढ़ राज।।
मांदर वाला मड़ियादिस ना, नचक रहीन तै नाच।
जलाजल जोक्कड़ बोलय, जय छत्तीसगढ़ राज।।
लइका बूढ़वा सब नाचत हे ओमा काके लाज।
तूहूँ तो नाचा दाउ के दाई जय छत्तीसगढ़ राज।।
एती ओती के गीत नहीं गावन भोजली गाबो आज।
गावय ददरिया देवर भौजी जय छत्तीसगढ़ राज।।
जेहर लड़वाही राजधानी बर तेकर मुँह ल दाग।
कथरी ओढ़ा के पीटा ओला जय छत्तीसगढ़ राज।।
दोहा ल अब छेवर करत हवं बजगे बजगे भाज।
जुर मिलके सब संगी बोलव जय छत्तीसगढ़ राज।।

■■■

Scanned with CamScanner

"छत्तीसगढ़ महिमा"

– श्री अरूण पैगम्बर,
पी.जी.डी.सी.ए. छात्र

बुड़ती मँ राजनांदगाँव, उत्ती मँ रायगढ़।
सरगुजा हे भंडार मँ, अउ रक्सहूँ मँ बस्तर,
भारत माता के फुलवारी मँ फूले सुघ्घर।
इही हमर छत्तीसगढ़! इही हमर छत्तीसगढ़।।
सिवनाथ, खारून, अरपा, हसदेव, केलो, कन्हार,

पैरी, महानदी, इन्द्रावती, सबरी के धार
दलहा, सिहावा, चिल्फी, मैनपाट, अबूझमाड़,
बारनवापारा, उदन्ती, काँकेर, अचानकमार।
चहुँदिस इहाँ जंगल, पहाड़ अउ नंदिया झर–झर।

इस्पात भिलाई, बइलाडीला लोहा देवय,
कोयला मँ कोरबा बिजली के डोंगा खेवय।
रायगढ़ ले सन–पटवा चांपा ले कोसा डोरी
भाटापारा गाँजत हावय सिरमिट के बोरी।
हे धान के कटोरा धनी उद्योग के बरोबर।

बमलई, दंतेश्वरी, राजिम, शिवरीनारायण,
खल्लारी, गिरौदपुरी, नागपुर अउ चम्पारन
ये मेला–तिरीथ के भुँइयाँ, मंदिर एखर धन।
सिरपुर, रतनपुर, मल्हार, अउ, भोरमदेव असन
हे जुन्नादिन के साखी इहाँ कतको धरोहर।
करमा, ददरिया, पंडवानी, रिलो, सुवा गीत,
राउत नाचा, गम्मत, पंथी नाचा, बाँस गीत,
मेहनत बाजा ए इहाँ जिनगी ए संगीत
खाय–पिए घलव के हावय अव्वड़ गुरतुर रीत
ठेठरी–खुरमी–अरसा–बबरा–घुसका–अंगाकर।
हमर छत्तीसगढ़ हमर छत्तीसगढ़।।

■■■

कौन तुम्हें अबला कहता है

– श्री योगेश साहू,
बी.एससी तृतीय वर्ष

कौन तुम्हे अबला कहता है?
समरांगण की चण्डी हो तुम,
लक्ष्मी दुर्गा की अवतार।
तुमसे ही चलती है सृष्टि,
दोनो कुलो के तारणहार,
साहस की शक्ति हो तुम ही,
प्रेरणा तुम महापुरूषों की।
जो तुमको छलता है उम्रभर,
तुम जननी उन पुरूषों की
किन्तु तुम्हारा विशाल हृदय ही
हर दुःख को चुप सहता है।
कौन तुम्हे .....
शिव शक्ति बिन शव हो जातें,
राम–सिया बिन रहते अधूरे।
बिना तुम्हारे मंगल यज्ञ भी,
कब होते निर्विघ्न हैं पूरे।
तुम आशीषों की छाया हो
सब पावनता से पावन हो।
अंधकार में किरण आस की,
चिर पतझड़ में सावन हो,
करूणा का सहस्त्र प्रवाह भी,
तेरे हृदय से ही बहता है
कौन तुम्हें .....
तुम भागिनी हो, तुम ही भार्या,
तुम ही जग माता हो,
तुम ही आत्माजा, तुम ही वधु हो।
नर की भाग्य विधाता हो।
तुम ही आवरण कोमल शिशु की,
तुम प्रेम की अनुरक्ति हो।
तुम ही उदाहरण विनय–शील की,
दया–क्षमा की शक्ति हो।
छल कपट का भाव कहाँ,
तेरे अंतस में रहता है।
कौन तुम्हें अबला कहता है ?

Scanned with CamScanner

वेद और उनका स्वरूप

– श्री नरेश चकधारी,
डी.सी.ए.

हमारा भारत देश प्राचीन काल से वेदों की भूमि के रूप में जाना जाता है। और हम भारतवासी उसी भारत देश का अभिन्न अंग है। वेद हमारे सबसे प्राचीन धर्म ग्रंथ है एवं यह भारत की आधारशिला है।

वेद महर्षियों के द्वारा अनुभव किये गये तत्वों के साक्षात प्रतिपादन है। चिन्तक तो विश्व साहित्य में भारतीय साहित्य की श्रेष्ठता का एकमात्र कारण वैदिक साहित्य को ही मानते है। हम वेंदो के ज्ञाता भले न बन सकें, पर आईयें हम वेदों के स्वरूप का एक सामान्य सी झलक से थोड़ा ज्ञान प्राप्त करने की चेष्ठा करते है।

वेद शब्द का व्याकरण निष्पन्न शास्त्रीय अर्थ है – "ज्ञान" स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार " विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भविष्यति, विदंति यथा विदन्ते, लभन्तेर विन्यन्ति विचारयन्ति, सर्वे मनुष्याः सत्याविद्यां यैयेषु तथा विद्धांसश्च ते वेदाः।" अर्थात् जिनसे सभी मनुष्य सत्य विद्या को जानते हैं, अथवा प्राप्त करते है। अथवा विचारते है, अथवा विद्वान होते है, अथवा सत्य को प्राप्त करने के लिए जिनमें प्रवृत्त होते है, वे वेद है।

वेद के प्रधानतः दो विभाग है – (1) संहिता, (2) ब्राम्हण। मंत्रो के समुदाय का नाम संहिता है और ब्राम्हण ग्रंथों में , जिनका लक्ष्य यज्ञ का सविस्तार वर्णन करना, इन्हीं मंत्रो की विस्तृत व्याख्या की गई है। ब्राम्हण ग्रंथों के भी तीन रूप होते है – (1) ब्राम्हण , (2) आरण्यक (3) उपनिषद। ब्राम्हण ग्रंथ गृहस्थों के लिए है, तो आरण्यक वानप्रस्थों के लिए उपयोगी है। उपनिषद वैदिक साहित्य का अन्त भाग है। इसके अनुशीलन से प्राणी संसार के प्रपंचों से छुटकारा पाकर अंत में सुख का अधिकारी बनता है।

किसी देवता विशेष की स्तुती में प्रयुक्त होने वाले अर्थ को स्मरण कराने की क्षमता रखने वाले वाक्य मंत्र कहलाते है। और ऐसे वाक्यों का समुच्चय या समुदाय संहिता कहलाती है। ये संहिताएं चार है – (1) ऋक भृग संहिता (2) यजुः संहिता (3) साम संहिता, (4) अथर्व संहिता । कहा जाता है कि संहिताओं का संकलन महर्षि वेद व्यास ने यज्ञ को दृष्टि में रखकर किया था। चूंकि प्रारंभ में वेदों के मंत्र वंश – परम्परा या गुरू शिष्य परम्परा से सुनकर याद किये जाते थे। इसलिए वेदों को श्रुति कहा जाता है। कालान्तर में इसे लिपिबद्ध कर लिया गया। ऋग्वेद में पूर्णतया ऋक अर्थात् पद्यमंत्र है, यजुर्वेद में मुख्यतया यजुर, अर्थात् गद्यमंत्र है, सामवेद में सभी गेय मंत्र है और अर्थववेद में पद्य मंत्रों की अधिकता है। प्रारंभ में ऋक, साम और यजुः नामक तीन वेद ही प्रसिद्ध हो रहे और इन्हें त्रयी भी कहा गया। इन्हें सस्वर पढ़ने पर जोर दिया गया है। वेंदों की रचना में शताब्दियों का समय अवश्य लगा होगा।

इन चारों वेदों का संक्षिप्त परिचय

ऋग्वेद संहिता – यह वैदिक संहिताओं में सबसे पुरान माना जाता है। और मैक्समूलर ने तो आर्य जाति के मनुष्य द्वारा कहा गया प्रथम शब्द माना है। इस वेद के दो मुख्य भाग है । (1) अष्टक अध्याय और सुक्त (2) मण्डल, अनुवाक और सुक्त। ऋग्वेद आठ भागों में विभक्त है जिसे अष्टक कहते है और इसमें 8 अष्टक और 64 अध्याय है। ऋग्वेद के दूसरे विभाग 10 खंडों में विभाजित है जिन्हें मण्डल की संख्या 1028 और मंत्रों की संख्या 10,580 है।

यजुर्वेद संहिता – इस वेद में मूलतः उन गद्यों का संग्रह है जो अध्वर्य यज्ञ के अवसर पर किया जाता है। कहा जाता है कि सूर्य ने बाजी अर्थात् घोड़ें का रूप धारण कर यजुर्वेद की संहिता का उपदेश दिया था, इसलिए इसे बाजसनेयी संहिता भी कहते है। इसमें कुल 40 अध्याय है। पतंजलि ने कृष्ण– यजुर्वेद की 101 शाखाएँ बताई है, किन्तु रौनक ने केवल 86 शाखाओ का उल्लेख किया है।

सामवेद संहिता – सामवेद का संकलन उद्गाता ऋत्विक के निमित किया गया यज्ञ के अवसर पर, जिस देवता के लिए हवन होता था, उसे बुलाने के लिए उद्रगाता उचित स्तर में उस देवता का स्तुति मंत्र गाता था। साम (गान) ऋचाओं के उपर ही आश्रित है। समग्र सामवेद में ऋचाएं ही गाई जाती है। इनकी संख्या 1549 है। जिनमें केवल 75 ऋचाएं ही स्वतंत्र है। जो ऋक संहिता में नहीं पाई जाती। सम् के गीतों में सात स्वरों का प्रयोग किया जाता है। संगीत का मूल वहीं उपलब्ध होता है। उस प्राचीन काल में संगीत की इतनी उन्नति भारतीय

Scanned with CamScanner

सभ्यता के विकास की सूचना देती है।

अथर्ववेद – इस वेद का नामकरण अथर्व ऋषि के नाम पर हुआ। कहा जाता है ब्रम्हा ने सृष्टि के लिए कठिन तप किया और घेर तप के कारण अथर्वन और अंकिगरा के वंशजो को जो मंत्रदृष्ट हुए उन्हीं का नामकरण अथर्ववेद भृंग्वंगिरसवेद और अवांनिरसवेद हुआ। अथर्ववेद के मंत्र यज्ञ के लिए नहीं वरन उसमें उत्पन्न विघ्नों के निवारण के लिए यज्ञ संरक्षक ब्रम्हा के निमित्त मंत्र दिये गये हैं जिनमें मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कियाओं का वर्णन किया गया है। अथर्ववेद में 731 सूक्त व 5849 मंत्र या ऋचायें है। अथर्ववेद में प्रारंभ के 19 काण्डों में मारण, मोहनादि कियाओं का वर्णन है। 14 वें काण्ड में विवाह विषयक मंत्र, 18 वें काण्ड में श्राद्ध विषयक और 24वां काण्ड सोमयज्ञ से संबंधित है।

वेदों के महत्व को स्पष्ट करने वाले एक पाश्चात्य विद्वान विंटर निट्ज ने यहाँ तक कहा है कि यदि हम अपनी संस्कृति के प्रारंभिक उदगम को जानना चाहते है यदि हम सबसे पुरानी यूरोपीय संस्कृति को समझना चाहते है। तो हमें भारत की शरण लेनी होगी, जहाँ ऐ यूरोपीय जाती का सबसे पुराना साहित्य सुरक्षित है।

अंत में यजुर्वेद की मंगल कामना के साथ –

पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रणुयाम शतम्।

अर्थ – हम सौ वर्षों जीत रहें, हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ सौ वर्षों तक का कार्य करती रहे। हम सौ वर्षों तक ज्ञान संचय करते रहें, हम सौ वर्षों तक अदीन सम्पन्न बने रहें।

■■■

अनमोल वचन

– कु. ममता पटेल, पूर्व छात्रा

(1) आदमी ही एक ऐसा प्राणी है जो, रोते हुए पैदा होता है। शिकायतें करते हुए जीता है, पछताते हुए मर जाता है।

(2) जहाँ पर उचित सम्मान न हो वहाँ पर परामर्श व स्पष्टीकरण न माँगों न ही दो।

(3) जिसकी व्याख्या करना मानसिक बोझ हो, वहाँ चुप रहना ही बेहतर है।

(4) अभिमानी और अहंकारी व्यक्ति खुद अपने पतन का कारण बनता है।

(5) सन्तान अच्छी या बुरी हो सकती है, पर माँ केवल अच्छी होती है। माँ की ममता निस्वार्थ होती है।

(6) मनुष्य अपने दुःखों से इतना दुःखी नहीं, जितना औरों के सुख से दुःखी है।

(7) जरूरतें तो पूरी हो सकती है, पर आशाएं और अभिलाषाएं कभी नहीं।

(8) हजार विचारों वाला पीछे रह जाता है एक निश्चय वाला ही सफलता पाता है।

(9) अमीर और गरीब में अन्तर केवल इतना है, अमीर तो खाता है अच्छा होने पर, गरीब खाता है मिलने पर।

(10) वह धन किस काम का जिससे बिस्तर तो खरीदा जा सके पर नींद नहीं।

वक्त

–श्री मोहित ध्रुव,
प्रयोशाला तकनीशियन

वक्त कब रोके रूका है जी किसी के वास्ते,
आदमी रूकता है, पर रूकते नहीं है रास्ते,
उम्र की पगडण्डियों पर, जिन्दगी हौले चली,
देह पर छोड़े वयस् के चिन्ह सारे रास्ते।

बात पतझड़ के बहारें आएंगी तय है मगर,
इन्तजार ए वक्त है, इक जंग सारे रास्ते,
रफ्ता रफ्ता ढल रहा है, आदमी उस ढाल पर,
जिससे बचने के लिए था तंग सारे रास्ते।

कौन जाने किस सुबह की शाम अनदेखी रहे
या कि अंधेरा दिवस की रोशनी के वास्ते
हर सुबह बेहतर हो सबसे, कौन ये ना चाहता
पर किसे मालूम करवट, वक्त ले किस रास्ते।

लम्हा लम्हा कह रहा है अलविदा अहले चमन
अब नहीं आवाज देना है, बुलाने वास्ते
पक चुकी अब उम्र झेली धूप की ही तल्खियाँ
दो घड़ी को सिर्फ , "छाया" ही जुटाने वास्ते।

Scanned with CamScanner

कम्प्यूटर वायरस

– श्री खुलेश्वर प्रसाद मिश्रा

कम्प्यूटर वायरस या कम्प्यूटर विषाणु एक कम्प्यूटर प्रोग्राम है। जो अपनी अनुलिपि कर सकता है और उपयोगकर्ता की अनुमति के बिना एक कम्प्यूटर को संक्रमित कर सकता है और उपयोगकर्ता को इसका पता भी नहीं चलता है। विभिन्न प्रकार के मैलवेयर और एडवेयर प्रोग्राम्स के संदर्भ में भी "वायरस" शब्द का उपयोग सामान्य रूप से होता है या अनुलिपियॉ खुद अपने आप में परिवर्तन कर सकती हैं, जैसा कि एक रूपांतरित वायरस में होता है। एक वायरस एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में तभी फैल सकता है जब इसका होस्ट एक असंक्रमित कम्प्यूटर में लाया जाता है, उदाहरण के लिए एक उपयोगकर्ता के द्वारा इसे एक नेटवर्क या इंटरनेट पर भेजने से या इसे हटाये जाने योग्य माध्यम जैसे फ्लापी डिस्क, सीडी, यू.एस.बी. ड्राइव (पेन ड्राइव) पर लाने से। इसी के साथ वायरस एक ऐसे संचिका तंत्र या जाल संचिका प्रमाली पर संक्रमित संचिकाओं के द्वारा दूसरे कम्प्यूटरों पर फैल सकता है। जो दूसरे कम्प्यूटर पर भी खुल सकती हो। कभी–कभी कम्प्यूटर का कीड़ा और ट्रोजन होर्सेस के लिए भी भ्रम पूर्वक वायरस शब्द उपयोग किया जाता है। एक कीड़ा अन्य कम्प्यूटरों में खुद फैला सकता है। इसे पोषी के एक भाग्य के रूप में स्थानांतरित होने की जरूरत नहीं होती है और एक ट्रोजन होर्स एक ऐसी फाईल है जो हानिरहित प्रतीत होती है। कीड़े और ट्रोजन होर्स एक कम्प्यूटर सिस्टम के आंकड़ो, कार्यात्मक प्रदर्शन या कार्य निष्पादन के दौरान नेटवर्किंग को नुकसान पहुंचा सकते है। सामान्य तौर पर एक कीड़ा वास्तव में सिस्टम के हार्डवेयर या साफ्टवेयर को नुकसान नहीं पहुंचाता जबकि कम से कम सिद्धांत रूप में, एक ट्रोजन पेलोड, निष्पादन के दौरान किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने में सक्षम होता है। जब प्रोग्राम नहीं चल रहा है तब कुछ भी नहीं दिखाई देता है लेकिन जैसे ही संक्रमित कोड चलता है ट्रोजन होर्स प्रवेशा कर जाता है। यही कारण है कि लोगों के लिए वायरस और अन्य मैलवेयर को खोजना बहुत ही कठिन होता है और इसलिए उन्हें साफ्टवेयर प्रोग्राम और पंजीकरण प्रकिया का उपयोग करना पड़ता है। आजकल अधिकांश व्यक्तिगत कम्प्यूटर इंटरनेट और लोकल एरिया नेटवर्क से जुड़े है और लोकल एरिया नेटवर्क दूषित कोड को फैलाने की प्रकिया को सुविधाजनक बनाता है। आज का वायरस नेटवर्क सेवाओं का भी लाभ उठा सकता है जैसे वर्ल्ड वाइड वैब, ई–मेल, त्वरित संदेश और संचिका साझा प्रणालियां वायरसों और कीड़ों को फैलने में मदद करती है। इसके अलावा, कुछ स्त्रोत एक वैकल्पिक शब्दावली का प्रयोग करते हैं जिसमें एक वायरस स्व अनुलिपि करने वाले मैलवेयर का एक रूप होता है। कुछ मेलवेयर, विनाशकारी प्रोग्रामों संचिकाओं को डिलिट करने, या हार्ड डिस्क की पुनः फार्मेटिंग करने के द्वारा कम्प्यूटर को क्षति पहुचानें के लिए प्रोग्राम किये जाते है। अन्य मैलवेयर प्रोग्राम किसी क्षति के लिए नहीं बनाये जाते है। लेकिन साधारण रूप से अपने आप को अनुलिपित कर लेते हैं, और शायद कोई टेक्सट, विडियो या ऑडियो संदेश के द्वारा अपनी उपस्थिति को दर्शाते है। यहॉ तक की ये कम अशुभ मैलवेयर प्रोग्राम भी कम्प्यूटर उपयोगकर्ता के लिए समस्याएं उत्पन्न कर सकते है। वे आमतौर पर वैध कार्यक्रमों के द्वारा प्रयोग की जाने वाली कम्प्यूटर की स्मृति को अपने नियंत्रण मे ले लेते है। इसके परिणामस्वरूप वे अक्सर अनियमित व्यवहार का कारण होते है और सिस्टम को नुकसान पहुंचाते है। इसके अतिरिक्त बहुत से मैलवेयर बग से ग्रस्त होते है, और ये बग सिस्टम को नुकसान पहुचा सकते है या डाटा क्षति का कारण हो सकते है। कई सीआईडी प्रोग्राम ऐसे प्रोग्राम है, जो उपयोगकर्ता द्वारा डाउनलोड किये गये हैं और हर बार पॉप अप किये जाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप कम्प्यूटर की गति बहुत कम हो जाती है लेकिन इसे ढूंढना और समस्या को रोकना बहुत ही कठिन होता है।

वायरस को हटाना :–

विंडो मी, विंडो एक्सपी, और विंडो विस्टा पर एक संभावना है एक औजार जो सिस्टम रिस्टोर के नाम से जाना जाता है जो कि पिछले चेक बिंदु के लिए रजिस्ट्री और जटिल तंत्र संचिका को रिस्टोर कर रखता है। अक्सर एक वायरस एक सिस्टम को हैंग कर देता है और एक इसी के बाद से फिर से बूट होने पर सिस्टम के रिस्टोर बिंदु में उसी दिन से समस्या आयेगी। पिछले दिनों से रिस्टोर बिंदु को दिया गया काम

Scanned with CamScanner

करना होता है, अब वायरस संग्रहीत संचिकाओं को संक्रमित नहीं कर पाता है। फिर भी कुछ वायरस, सिस्टम के रिस्टोर को अन्य महत्वपूर्ण औजारों जैसे टास्क मैनेजर और कमांड प्रोम्प्ट को निष्क्रिय कर देते है। एक वायरस जो ऐसा करता है उसका उदाहरण है सियाडोर प्रशासकोण के पास भिन्न कारणों के लिए सीमित उपयोगकर्ताओं से ऐसे औजारों को निष्क्रिय करने के विकल्प उपलब्ध है। वायरस ऐसा करने के लिए रजिस्ट्रीमें संशोधन करता है, केवल उस समय ऐसा नहीं होता है जब प्रशासक कम्प्यूटर को नियंत्रित कर रहा हो, यह सब उपयोगकर्ताओं को औजारों को एक्सेस करने से रोकता है। जब एक संक्रमित औजार सक्रिय होता है तो यह एक संदेश देता है। "आपके प्रशासक के द्वारा टास्क मैनेजर को अक्षम कर दिया गया है। " यहाँ तक कि यदि उपयोगकर्ता जो प्रोग्राम खोलने की कोशिश कर रहा है वह प्रशासक है। उपयोगकर्ता जो माइक्रोसाफ्ट ऑपरेटिंग सिस्टम को चला रहा है, एक मुफ्त स्केन चलाने के लिए माइक्रोसाफ्ट की वेबसाईट पर जा सकता है, यदि उनके पास उनका 20 अंकों की पंजीकरण संख्या है।

प्रयोगशाला परिचारक

■■■

"रसोई और आप"

–श्रीमती लक्ष्मी निषाद

1. आलू उबालते समय पानी में थोड़ा सा सिरका डालने से आलू जल्दी उबलते है, और नरम रहते है।
2. रोटी को मुलायम बनाने के लिए गेहूं के बराबर ज्वार का आटा भी डालें।
3. कुरकुरे डोसे बनाने के लिए भीगे हुए चावल में एक छोटा चम्मच तिवर की दाल और मेथी की बीज डाले।
4. आटा गूंथते समय उसमें आधा चम्मच बेकिंग पावडर डालने से रोटी नरम बनती है।
5. सूखी डबल रोटी को घी में भून कर व मसाले डालकर सब्जी बना सकते है आप चाहें तो इसे घी में तलकर चासनी में डुबो कर मिठाई बना सकते है।
6. चावल बनाते समय चार दाने इलायची के पीस कर डालने से चावल ज्यादा स्वादिष्ट बनते है।
7. हरी चटनी बनाते समय उसमें थोड़ी मात्रा में अंकुरित मूंग डालने से चटनी पौष्टिक और स्वादिष्ट बनती है।
8. यदि मिर्च काटने से हाथ जलन कर रहे है तो कच्चा आलू या खीरा काट कर रगड़े नहीं तो पानी में शक्कर घोलकर उसमें हाथ डालें।
9. चाय उबल जाने पर उसमें संतरे का सूखा छिलका डाल दें चाय से अच्छी खुशबू आयेगी।
10. सब्जी यदि जल जाय तो दुर्गंध दूर करने के लिए उसमें तुलसी के तीन चार पत्ते डाल कर ढंक दें। बर्तन में दाल या चावल के जलने की महक आने पर तत्काल उतारकर पानी में रख दें।

■■■

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं कर्मचारीगण

क्र.	नाम	पद	योग्यता
01	डॉ. आलोक शुक्ला	प्राचार्य	एम.ए., एम.फिल., पी–एच.डी. (हिंदी)
02	डॉ. मधुरानी शुक्ला	सहायक प्राध्यापक रसायनशास्त्र	एम.एस.सी., पी–एच.डी.(रसायनशास्त्र)
03	सुश्री चंदना भट्टाचार्य	सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी	एम.ए. अंग्रेजी
04	श्री एस.आर. वड्डे	सहायक प्राध्यापक वाणिज्य	एम.कॉम, एम.फिल.
05	श्री ए.के. गुप्ता	सहायक प्राध्यापक वाणिज्य	एम.कॉम, एम.फिल.
06	श्री जितेन्द्र कुमार सिन्हा	सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र	एम.ए.
07	श्री प्रकाशचंद जांगड़े	सहायक प्राध्यापक राजनीतिशास्त्र	एम.ए.
08	डॉ. रजिया सुल्ताना	सहायक प्राध्यापक प्राणीशास्त्र	एम.एस.सी., पी–एच.डी.
09	सुश्री प्रदीप्ति खरे	कम्प्यूटर विभाग (अस्थायी)	एम.एस.सी. (कम्प्यूटर साइंस)
10	श्री अजय पटेल	कम्प्यूटर विभाग (अस्थायी)	एम.सी.ए.

कर्मचारीगण

क्र.	नाम	पदनाम
01	श्री पुरानिक राम साहू	मुख्य लिपिक
02	सुश्री ममता साहू	सहायक ग्रेड–03
03	श्री अर्जुन लाल पटेल	प्रयोगशाला तकनीशियन
04	श्री नवल कुमार वर्मा	प्रयोगशाला तकनीशियन
05	श्री नारायण सोनी	प्रयोगशाला तकनीशियन
06	श्री मोहित कुमार ध्रुव	प्रयोगशाला तकनीशियन
07	श्रीमती मंजू शर्मा	प्रयोगशाला परिचारक
08	श्री संजू वर्मा	प्रयोगशाला परिचारक
09	श्री खुलेश्वर मिश्रा	प्रयोगशाला परिचारक
10	श्री विनय मारकण्डे	प्रयोगशाला परिचारक
11	श्री मुकेश नेताम	भृत्य
12	श्रीमती लक्ष्मीन निषाद	भृत्य
13	श्री राकेश यादव	अस्थायी कर्मचारी
14	श्रीमती मीना साहू	अस्थायी कर्मचारी

Scanned with CamScanner

—महाविद्यालय खबरों में—

अखबारों की कतरने

::: महाविद्यालय खबरों में :::

::: अखबार की कतरनें :::

मतदान के लिए मोबाइल से दिलाई ऑनलाइन शपथ

मतदाता जागरुकता सप्ताह के तहत कुलेश्वर कॉलेज में हुए विविध कार्यक्रम

महाविद्यालय में वेबसाइट का किया लोकार्पण

जागरूक युवा ही सशक्त लोकतंत्र का निर्माण कर सकता है : डॉ योगेन्द्र चौबे

श्री कुलेश्वर महादेव कॉलेज में वार्षिकोत्सव का आयोजन

गोबरा कॉलेज में चला स्वच्छता अभियान

अब कुलेश्वर महादेव के नाम से गोबरा कॉलेज जाना जाएगा

दैनिक भास्कर रायपुर, शुक्रवार 24 जून, 2019

नशा विरोधी दिवस • वृंदावन हॉल में संस्थाओं का किया सम्मान, मंत्री टेकाम ने कहा-

अकेले सरकार से शराबबंदी संभव नहीं समाज के हर वर्ग का साथ मिलना जरूरी

समाज में बदलाव के लिए छात्र आगे आएं

श्रीकुलेश्वर महादेव महाविद्यालय में स्वीप कार्यक्रम आयोजित

आयोजन | शासकीय महाविद्यालय में मनाया गया वार्षिकोत्सव, बांटे पुरस्कार

समूह नृत्य व उड़िया, पंजाबी गीतों पर झूमे छात्र-छात्राएं

महाविद्यालय में स्वास्थ्य शिविर, 78 ग्रामीणों की सेहत की जांच की गई

परीक्षा...

शांतिपूर्वक कॉलेज की परीक्षाएं शुरू

15/03/2018

एनएसएस के स्थापना दिवस के अवसर पर किया पौधारोपण

कुलेश्वर महादेव कॉलेज में हुआ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

हैण्डी क्राफ्ट मेला

राष्ट्रीय सेवा योजना में रानी लक्ष्मीवाई के रूप में छात्राएं।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

मतदाता जागरुकता कार्यक्रम में शपथ लेते हुये।

योग दिवस : योग मुद्रा में।

पुरस्कार ग्रहण करने पश्चात छात्र-छात्राएँ।

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय की गतिविधियाँ

छात्राओं का खो-खो प्रतियोगिता।

छात्राएँ दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेते हुये।

राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ - एक झलक

Scanned with CamScanner

महाविद्यालय परिवार

Scanned with CamScanner